शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 49 वां वर्ष

ई – पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 49 अंक – 7 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2026 सोमवार 5 – 12 फरवरी 2024 मूल्य पांच रूपये

क्या कमलेश ठाकुर होगी हमीरपुर से कांग्रेस प्रत्याशी?

शिमला/शैल। क्या कांग्रेस हमीरपुर लोकसभा क्षेत्र से मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खु की धर्मपत्नी श्रीमती कमलेश ठाकुर को प्रत्याशी बनाने जा रही है। यह चर्चा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्षा सांसद प्रतिभा सिंह के उस ब्यान के बाद सामने आयी है जिसमें उन्होंने कहा है कि मुख्यमंत्री ने हमीरपुर से उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की बेटी डॉ.आस्था का

नाम सुझाया है और उपमुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी कमलेश ठाकुर का नाम प्रपोज किया है। सूत्रों के मुताबिक यह दोनों हाईकमान के संज्ञान में आ चुके हैं। स्मरणीय है कि हमीरपुर लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस एक लम्बे अरसे से हारती चली आ रही है। इस समय संयोग वश मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री दोनों हमीरपुर लोकसभा क्षेत्र से ही आते हैं। फिर विधानसभा चुनावों में हमीरपुर जिले में भाजपा अपना खाता भी नहीं खोल पायी है। सत्रह विधानसभा क्षेत्रों पर आधारित इस लोकसभा क्षेत्र में भाजपा के पांच ही विधायक हैं। कांग्रेस के पास ग्यारह और दो निर्लदलीय हैं। इस गणित में कांग्रेस के लिये सबसे आसान क्षेत्र हमीरपुर ही माना जा रहा है। मुकेश अग्निहोत्री की पत्नी के अचानक निधन से उस परिवार का सारा गणित बिगड़ गया है। इसलिये ऐसी परिस्थितियों में उस परिवार पर लोकसभा लड़ने की जिम्मेदारी डालना जायज नहीं माना जायेगा।

फिर हमीरपुर क्षेत्र से भाजपा के दो शीर्ष नेता ताल्लुक रखते हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा बिलासपुर से ताल्लुक रखते हैं। सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर यहां से सांसद हैं। भाजपा की ओर से अनुराग या नड्डा में से ही कोई यहां से चुनाव लड़ेगा यह तय है। ऐसे में भाजपा के इन दिग्गजों के मुकाबले में मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी से बेहतर और कोई उम्मीदवार हो नहीं सकता। कमलेश ठाकुर नादौन विधानसभा क्षेत्र में सक्रिय भी हो गयी हैं। बल्कि नादौन विधानसभा क्षेत्र का संचालन मुख्यमंत्री ने श्रीमती कमलेश ठाकुर को ही सौंप रखा है। स्थानीय रेस्ट हाउस सेरा उनकी गतिविधियों का केन्द्र बना हुआ है और यहीं से वह स्थानीय प्रशासन को निर्देशित करती हैं। इसलिये वर्तमान परिदृश्य में यदि कमलेश ठाकुर को कांग्रेस हमीरपुर से उम्मीदवार बनाती है और वह जीत जाती हैं तो मुख्यमंत्री के लिये इससे बड़ी उपलब्धि नहीं हो सकती।

हिमाचल के कांग्रेस संगठन और सरकार में किस तरह का तालमेल चला हुआ है यह प्रतिभा सिंह और राजेन्द्र राणा तथा अन्य नेताओं के ब्यानों से सामने आ चुका है। इस सब की जानकारी कांग्रेस हाईकमान को भी हो चुकी है। सरकार की एक वर्ष की उपलब्धियां क्या हैं इसकी व्यवहारिक परीक्षा इन लोकसभा चुनाव में हो जायेगी। अभी बजट सत्र होने जा रहा है उसमें वित्तीय प्रबन्धन का खुलासा सामने आ जायेगा। सरकार ने व्यवस्था परिवर्तन का जो प्रयोग शुरू कर रखा है उसके कितने सार्थक परिणाम जनता तक पहुंचे हैं इसका भी खुलासा यह चुनाव कर देंगे। क्योंकि सरकार की हर कारगुजारी की परीक्षा चुनाव परिणाम होते हैं। इस समय राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस की जो स्थिति बनती जा रही है उसके परिदृश्य में कांग्रेस शासित राज्यों से हाईकमान को पूरी-पूरी सीटें जीतने की अपेक्षा होगी। उस गणित में प्रदेश सरकार और संगठन दोनों की प्रतिष्ठा दांव पर होगी। क्योंकि एक वर्ष में सरकार बेरोजगार युवाओं को कुछ विशेष नहीं दे पायी है। विपक्ष और अन्य वर्गों ने जो भी सवाल एक वर्ष में उछाले हैं उनका जवाब चुनावों में व्यवस्था परिवर्तन नहीं बन पायेगा। जो परिस्थितियां इस समय बनी हुयी है उनमें विश्लेषकों के अनुसार कमलेश ठाकुर का नाम सामने लाकर मुख्यमंत्री के विरोधियों ने एक तीर से कई निशाने साधने का काम किया है क्योंकि संगठन के सक्रिय सहयोग के बिना चुनावों में सफलता कठिन हो जाती है। कर्मचारियों के कई वर्ग सरकार से असंतुष्ट चल रहे हैं। आम जनता को कोई राहत यह सरकार दे नहीं पायी है। केवल केन्द्र पर असहयोग के आरोप के सहारे चुनावी सफलता संभव नहीं लगती। क्योंकि सरकार ने अपने खर्चों पर कोई लगाम

नही लगायी है। इस वस्तुस्थिति में मुख्यमंत्री के लिये कमलेश ठाकुर के नाम का अनुमोदन करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं रह जाता है।

कौन होगा राज्यसभा का उम्मीदवार आशा या कौल सिंह

शिमला/शैल। हिमाचल से राज्यसभा में कौन जायेगा यह मुद्दा सुक्खू सरकार और संगठन के लिये एक बड़ा सवाल बनता जा रहा है। क्योंकि मुख्यमंत्री और पार्टी अध्यक्षा दोनों ने ही इसके लिये सोनिया गांधी और प्रियंका गांधी के नाम का प्रस्ताव हाईकमान को दिया था। अब जब सोनिया गांधी का राजस्थान से उम्मीदवार होना लगभग तय माना जा रहा है तो स्वभाविक है कि प्रियंका गांधी उन्हीं की सीट से लोकसभा में जाना पसन्द करेंगी। प्रियंका राज्यसभा के माध्यम से संसद में जाने का रास्ता नहीं चुनेंगी। ऐसे में राज्यसभा के लिये प्रदेश से ही किसी का चयन होगा।

इस समय सरकार और संगठन में किस तरह का तालमेल चल रहा है यह जगजाहिर है। विधानसभा चुनावों में जो गारंटीयां दी गयी थी उनकी व्यवहारिक स्थिति भी सामने है। कर्मचारियों के कई वर्ग सरकार से नाराज होकर धरने प्रदर्शनों पर उतर आये हैं। युवाओं को नौकरी के वादे की जगह आउटसोर्स कर्मचारीयों को निकाल कर स्थिति और जटिल हो गयी है। जब से पैन्शन में 20% कटौती किये जाने की संभावना का खुलासा नेता प्रतिपक्ष ने किया है उससे सरकार की मुश्किलें और बढ़ गयी हैं। ऐसी वस्तुस्थिति में राज्यसभा के लिये प्रदेश के वरिष्ठ नेताओं ठाकुर कौल सिंह या आशा कुमारी जैसों में से ही किसी एक को राज्यसभा में भेज कर राजनीतिक संतुलन बनाने का प्रयास किया जाना चाहिये। क्योंकि अभी तक जितने लोगों को इस सरकार में ताजपोशियां मिली हैं उनकी मेरिट मुख्यमंत्री से मैत्री से अतिरिक्त और कुछ नहीं है। ऐसे में राज्यसभा इस समय एक ऐसा अवसर है जिसके माध्यम से प्रदेश में संतुलन बनाया जा सकता है। यदि आनन्द शर्मा को हाईकमान अनुमोदित नहीं करती है तो आशा और कौल सिंह में से किसी एक को यह अवसर मिलना चाहिए।

मुख्यमंत्री ने दिवंगत प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री को श्रद्धांजलि दी, शोक संतप्त परिवार से संवेदनाएं व्यक्त कीं

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने जिला ऊना के हरोली उपमण्डल के गौंदपुर जयचंद भाग लिया। उप-मुख्यमंत्री की पुत्री आस्था अग्निहोत्री ने अपनी दिवंगत माता को मुखाग्नि दी।

पहुंच कर उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की धर्मपत्नी प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री के निधन पर शोक व्यक्त किया। प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री का शुक्रवार रात को देहावसान हो गया।

मुख्यमंत्री ने उप-मुख्यमंत्री के पैतृक गांव गौंदपुर जयचंद में पार्थिव शरीर की अंतिम यात्रा तथा संस्कार में

मुख्यमंत्री ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय क्षति को सहन करने की प्रार्थना की है। उन्होंने कहा कि सिम्मी अग्निहोत्री के आकस्मिक निधन से परिवार में भारी शोक है तथा उनकी कमी हमेशा रहेगी। उन्होंने कहा, ''मैं, प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री से विश्वविद्यालय काल से परिचित था, वह सामाजिक कार्यो के प्रति समर्पित एक उच्च शिक्षित महिला थीं। मुकेश अग्निहोत्री तथा उनकी पुत्री को इस दुःख से उबरने के लिए एक-दूसरे का साथ देना होगा। भगवान उनकी आत्मा को शांति प्रदान करे। इस दुःखद घड़ी में हम शोकाकुल परिवार के लिए प्रार्थना करते हैं।''

इस अवसर पर विधानसभा के अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया, कृषि मंत्री चन्द्र कुमार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल, उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान, ग्रामीण विकास तथा पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह, लोक निर्माण तथा शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह, नगर एवं ग्राम नियोजन तथा तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी, आयुष मंत्री यादविन्द्र गोमा, विधायकगण, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार सुनील शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (मीडिया) नरेश चौहान, राजनेता तथा अन्य गणमान्य उपस्थित थे।

राज्यपाल ने प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की धर्मपत्नी प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया है। प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री का शुक्रवार रात को निधन हो गया।

राज्यपाल ने अपने शोक संदेश में परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने तथा शोक संतप्त परिवार को इस अपूरणीय क्षति से उबरने की प्रार्थना की है।

सांसद प्रतिभा सिंह ने प्रो.सिम्मी अग्निहोत्री के आकस्मिक निधन पर गहरा दुख प्रकट किया

शिमला/शैल। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष एवं सांसद प्रतिभा सिंह ने उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की पत्नी प्रोफेसर सिम्मी अग्निहोत्री के आकस्मिक निधन पर गहरा दुख प्रकट करते हुये कहा है कि उन्हें विश्वास ही नही हो रहा है कि सिम्मी अचानक असमय पर हम सबको छोड़ कर चिरनिद्रा में चली गई है।

प्रतिभा सिंह ने अपने एक शोक संदेश में मुकेश व बेटी आस्था से अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए इस असहनीय पीड़ा को सहन करने की शक्ति देने व भगवान श्री विष्णु जी से दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की है

नड्डा बिंदल जयराम ने उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की पत्नी के निधन पर शोक प्रकट किया

शिमला/शैल। भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा, भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सौदान सिंह नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर, केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर, प्रभारी अविनाश राय खन्ना, सह प्रभारी संजय टंडन, प्रभारी श्रीकांत शर्मा प्रदेश महामंत्री बिहारी लाल शर्मा, त्रिलोक कपूर, डॉक्टर सिकंदर कुमार, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सुरेश कश्यप, सतपाल सती ने शोक प्रकट करते हुये कहा कि हिमाचल प्रदेश के उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की पत्नी 56 वर्षीय डॉ. सिम्मी अग्निहोत्री का शुक्रवार रात को निधन हो गया। इस दुख की घड़ी में प्रदेश के उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री एवं उनकी सुपुत्री आस्था को भगवान संबल प्रदान करें।

मुकेश अग्निहोत्री ने रात करीब 12 बजे इंटरनेट मीडिया अकाउंट पर इसकी जानकारी देते हुए लिखा, 'सिम्मी अग्निहोत्री हमें और आस्था को छोड़कर चली गई है।'

इस बाबत बताया जा रहा है कि वह गोंदपुर जयचंद स्थित अपने घर में ही थी कि अचानक उनका रक्तचाप घटने लगा। उन्हें चंडीगढ़ स्थित मैक्स अस्पताल ले जाया जा रहा था कि पंजाब के कुराली के पास उनकी मृत्यु हो गई। मुकेश अग्निहोत्री शिमला में कैबिनेट बैठक के बाद घर लौट रहे थे, जब उन्हें डॉ. सिम्मी के बीमार होने की सूचना मिली।

डॉ. सिम्मी हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में कार्मिक प्रशासन विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत थीं। उनकी एक पुस्तक इंपावरिंग ट्राइब्स, अ पाथ टूवार्ड्स सस्टेनेवल डेवलपमेंट प्रकाशित हुई है, जिसका लोकार्पण राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने करीब तीन माह पहले किया था।

सामाजिक और धार्मिक कार्यों में डॉ. सिम्मी की रुचि अधिक रही है।

भाजपा नेताओं ने शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदनायें व्यक्त करते हुये दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की है।

भाजपा प्रदेश प्रभारी अविनाश राय खन्ना ने हिमाचल प्रदेश के उपमुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री से टेलीफोन पर बात की और उनकी पत्नी डॉक्टर सिम्मी अग्निहोत्री के निधन को लेकर संवेदनाएं व्यक्त की।

विधानसभा अध्यक्ष ने उपमुख्यमंत्री की धर्मपत्नी के निधन पर व्यक्त किया शोक

शिमला/शैल। विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया ने उप मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की धर्मपत्नी प्रोफेसर सिम्मी अग्निहोत्री के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है।

उन्होंने ईश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति और शोक-संतप्त परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना भी की है।

प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। कृषि मंत्री प्रोफेसर चंद्र कुमार, पर्यटन निगम के अध्यक्ष आरएस बाली, विधायक केवल सिंह पठानिया तथा विधायक संजय रत्न ने उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की धर्मपत्नी प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री के आकस्मिक निधन पर शोक व्यक्त किया है। प्रो. सिम्मी अग्निहोत्री का शुक्रवार रात को निधन हो गया। उन्होंने शोक संदेश में परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने तथा शोक संतप्त परिवार को इस अपूरणीय क्षति से उबरने की प्रार्थना की है।

मुख्यमंत्री ने आईजीएमसी में विद्या स्टोक्स का कुशलक्षेम जाना

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने इंदिरा गांधी चिकित्सा महाविद्यालय, शिमला में पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता विद्या स्टोक्स का कुशलक्षेम जाना। विद्या स्टोक्स वहां स्वास्थ्य लाभ ले रही हैं। मुख्यमंत्री ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

इस अवसर पर विधायक हरीश जनारथा, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार सुनील शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार (मीडिया) नरेश चौहान, महापौर नगर निगम शिमला सुरेंद्र चौहान, मुख्यमंत्री के ओएसडी रितेश कपरेट और कांग्रेस नेता सतपाल रायजादा भी मुख्यमंत्री के साथ थे।

14 से 29 फरवरी तक चलेगा विधानसभा का बजट सत्र

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया ने प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुये बताया कि हिमाचल प्रदेश की चौदहवीं विधानसभा का पंचम सत्र

14 फरवरी 2024 को राज्यपाल महोदय के अभी भाषण के साथ आरम्भ होगा। यह सत्र 29 फरवरी 2024 तक चलेगा। इस सत्र में कुल 13 बैठकें होगी। राज्यपाल के अभिभाषण पर 15 और 16 फरवरी को चर्चा होगी। 17 फरवरी को मुख्यमंत्री वित्तीय वर्ष 2024 -25 के लिये बजट अनुमानों को प्रस्तुत करेंगे। यह वर्तमान सरकार का दूसरा बजट होगा। 19 से 22 फरवरी तक बजट पर चर्चा होगी। 29 फरवरी को बजट पारित होगा। 22 और 28 फरवरी गैर सरकारी कार्य सदस्य दिवस के लिये निर्धारित किये गो हैं। उपमुख्यमंत्री मुकेश अभिनेत्री की धर्मपत्नी सिम्मी अग्निहोत्री के दुखद: निधन तथा पूर्व विधायक दीनानाथ शास्त्री के निधन पर शोकोदगार होंगे। कुलदीप सिंह पठानिया ने कहा कि इस सत्र में माननीय सदस्यों से कुल 785 प्रश्नों की सूचना प्राप्त हुई है जिसमें 578 प्रश्न तारांकित तथा 207 प्रश्न और अतारांकित की सूचनायें प्राप्त हुई है। जिन्हें नियमानुसार सरकार को आगामी कारवाई हेतु प्रेषित किया गया है। इसके अतिरिक्त नियम 61, 62, 63, 67 तथा 324 के तहत अभी तक कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है। जबकि नियम 101 के अंतर्गत 7 सूचनायें नियम 130 के अंतर्गत 8 सूचनायें प्राप्त हुई है जिन्हें आदमी कारवाई हेतु सरकार को प्रेषित कर दिया गया है।

उन्होंने कहा कि 22 वर्षो के बाद सदन के अन्दर लगभग 94 लाख रुपए की अनुमानित लागत से पुराने ऑडियो कॉन्फ्रेंसिंग सिस्टम को बदलकर उसका नवीनीकरण किया गया है तथा अब बेहतर एवं पर परिष्कृत ऑडियो डिजिटल कॉन्फ्रेंसिंग सिस्टम को स्थापित किया गया है। जिससे अब विधायकों को सुनने तथा बोलने में परेशानी का सामना नहीं करना होगा।

कुलदीप सिंह पठानिया ने सता पक्ष तथा विपक्ष के सदस्यों से अनुरोध किया कि वे जनहित से जुड़े विषयोंपर सदन में सार्थक चर्चा करें।

शैल समाचार
संपादक मण्डल
संपादक- बलदेव शर्मा
सयुक्त संपादक:जे.पी.भारद्वाज
विधि सलाहकार: ऋचा शर्मा

मुख्य पोस्टमास्टर जनरल ने राज्यपाल से भेंट की

शिमला/शैल। प्रदेश के मुख्य पोस्टमास्टर जनरल अम्बेश उपमन्यु ने राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल से भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने राज्यपाल को अयोध्या में निर्मित राम मन्दिर की स्मारक डाक टिकट भी भेंट की। अम्बेश उपमन्यु ने अवगत करवाया कि अयोध्या राम मन्दिर पर आधारित डाक टिकट की बड़े स्तर पर मांग है और अब यह डाकघरों में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त डाकघरों के माध्यम से 20 फरवरी से 28 मार्च, 2024 तक राम मन्दिर से संबंधित स्मारिका और प्रधानमंत्री का संदेश भी पंचायत स्तर तक पहुंचाया जाएगा। उन्होंने बताया कि हिमाचल प्रदेश में विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान डाक विभाग ने 1093 स्थानों पर सहयोग किया।

राज्यपाल ने डाक विभाग के इन प्रयासों की सराहना की।

इस अवसर पर निदेशक डाक सेवाएं बिशन सिंह सहित अन्य विभागीय अधिकारी भी उपस्थित थे।

आगामी बजट में किसान की आय बढ़ाने के लिए आएंगी नई योजनजाएं:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने शिमला के होटल पीटरहॉफ में प्रदेश के दुग्ध उत्पादकों के साथ संवाद किया। उन्होंने कहा कि सरकार कृषि को उद्योग के रूप में प्रोत्साहित कर रही है ताकि किसानों को सामर्थ्यवान एवं स्वावलम्बी बनाया जा सके। उन्होंने कहा कि हमारा प्रदेश ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर निर्भर है, जिसमें कृषि व दुग्ध उत्पादन

की महत्वपूर्ण भूमिका है। प्रदेश सरकार आगामी बजट में किसानों की आय बढ़ाने के लिए नयी योजनाएं ला रही है, ताकि पशुपालन और कृषि के बारे में समाज की सोच में सकारात्मक बदलाव आ सके। आगामी दो वर्षों में राज्य सरकार के इन प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आएंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक खेती में किसानों का भविष्य है, जिसमें पशुपालन की भूमिका अहम है क्योंकि कृषि व दूध उत्पादन का सीधा आपसी संबंध है। उन्होंने कहा कि किसानों के हाथ में पैसा पहुंचे, इसके लिए नीतियों व नियमों में मूलभूत परिवर्तन किए जा रहे हैं। वर्तमान राज्य सरकार जन सहयोग से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में आगे बढ़ रही है और कृषि में क्रांतिकारी परिवर्तन के दृष्टिगत पशुपालन को विशेष रूप से बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि दूध खरीद के मूल्य में छह रुपए की बढ़ौतरी राज्य सरकार की ओर से पशुपालकों को निश्चित आय का आश्वासन है और इससे वे दुग्ध उत्पादन के लिए प्रोत्साहित होंगे। उन्होंने कहा कि सरकार दूध उत्पादकों को कर में रियायत देने पर भी विचार करेगी।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि हिमाचल में दूध की गुणवत्ता बेहतर है तथा इसमें और सुधार करते हुए बेहतर विपणन व्यवस्था से जोड़कर किसानों की आय में आशातीत बढ़ोतरी की जा सकती है। इसी दृष्टिकोण के साथ सरकार अब कृषि को रोजगार के रुप में अपनाने के लिए प्रोत्साहन प्रदान कर रही है। उन्होंने कहा कि आज तक इस बारे में गम्भीरता से विचार नहीं किया। उन्होंने कहा, ''मैं आपको स्वावलंबी बनाना चाहता हूं, ताकि किसान घर में बैठकर अपनी आय के साधन बढ़ा सके। किसानों को शोषण से बचाने और उन्हें उनकी मेहनत का उचित मूल्य दिलाने के लिए राज्य सरकार प्रभावी कदम उठा रही है। इन प्रयासों से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में मदद मिलेगी। जब गांव के लोगों की आय बढ़ेगी, तभी हिमाचल प्रदेश आत्मनिर्भर बनेगा। इसके लिए हमें पुरानी परंपराओं और नयी टेक्नोलॉजी को साथ लेकर चलना होगा।'

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा प्रदेश की दुग्ध आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए दूध खरीद मूल्य को लागत मूल्य के आधार पर देने के लिए 'हिम गंगा योजना' की शुरुआत इस वित्त वर्ष से कर दी गयी है, जिसके लिए 500 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। इसके साथ ही जिला कांगड़ा के ढगवार में 1 लाख 50 हजार लीटर प्रतिदिन की क्षमता का दुग्ध प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित किया जाएगा, जिसकी क्षमता 3 लाख लीटर प्रतिदिन तक बढ़ाई जा सकती है। यह संयंत्र पूरी तरह से स्वचालित होगा जिस पर अनुमानित 226 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। संयंत्र की स्थापना के लिए भूमि स्थानांतरण की प्रक्रिया पूरी की जा चुकी है। उन्होंने कहा कि बकरी के दूध और पहाड़ी गाय के दूध की खूबियों का भी अध्ययन किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने हिमाचल को 31 मार्च, 2026 तक हरित ऊर्जा राज्य के रूप में विकसित करने का लक्ष्य रखा है। डीजल व पैट्रोल गाड़ियों पर निर्भरता कम की जा रही है और ई-व्हीकल को प्रमोट किया जा रहा है। राजीव गांधी स्वरोजगार स्टार्ट अप योजना के दूसरे चरण में ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए किसानों की अनुपयोगी भूमि का उपयोग सौर ऊर्जा उत्पादन में किया जाएगा। इस योजना के माध्यम से बेरोजगार युवा अपनी भूमि पर 100, 200, 500 किलोवाट का सौर ऊर्जा परियोजनाएं स्थापित कर पाएंगे तथा राज्य सरकार उनसे 25 वर्षों तक बिजली की खरीद कर, उन्हें निश्चित आय सुनिश्चित करेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने वर्ष 2027 तक अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने और वर्ष 2032 तक देश का सबसे समृद्ध राज्य बनाने का लक्ष्य रखा है।

मुख्यमंत्री ने किसानों के साथ खुले संवाद सत्र में व्यापक चर्चा भी की और किसानों व अन्य हितधारकों से मिले सुझावों को राज्य सरकार की नीति में शामिल करने का आश्वासन भी दिया।

इससे पूर्व मुख्यमंत्री ने मिल्कफैड की प्रदर्शनी का अवलोकन भी किया।

कार्यक्रम में पहुंचने पर सचिव पशुपालन, राकेश कंवर ने मुख्यमंत्री का स्वागत किया, जबकि मिल्कफैड के प्रबंधक निदेशक डॉ. विकास सूद ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

दूध उत्पादकों ने दूध खरीद रेट को एकमुश्त छः रुपये बढ़ाने पर मुख्यमंत्री का जताया आभार

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश के दुग्ध उत्पादकों के साथ संवाद के दौरान विभिन्न दुग्ध सहकारी सभाओं के प्रतिनिधियों ने दूध के खरीद मूल्य एकमुश्त छः रुपये बढ़ाने के लिए मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू का आभार व्यक्त किया।

जिला कांगड़ा के पालमपुर क्षेत्र के अनिल कुमार ने कहा कि वह वर्ष 1995 से दुग्ध सोसायटी का संचालन कर रहे हैं और 30 वर्ष में दूध खरीद मूल्य केवल 18 रुपये बढ़ा, जबकि मुख्यमंत्री ने एक वर्ष में 6 रुपये बढ़ाकर प्रदेश के हजारों किसानों को लाभ पहुंचाया है। उन्होंने भेड़ और बकरी की मृत्यु पर मिलने वाले मुआवजे को बढ़ाकर 6 हजार रुपये करने तथा गाय-भैंस की मृत्यु पर मिलने वाले मुआवजे को बढ़ाकर 55 हजार करने पर भी मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया।

वहीं जिला कांगड़ा के नगरोटा बगवां के विकास सरीन ने कहा कि वह गुड़गांव के एसी ऑफिस में बैठ कर काम करते थे और कभी नहीं सोचा था कि दुग्ध सोसायटी बनाकर दूध उत्पादन से जुड़ेंगे। शुरूआत में काफी दिक्कत आयी और तीन लीटर दूध एकत्र करने के लिए तीन महीने तक प्रयास किए और एक लाख रुपये खर्च किए, लेकिन दूध खरीद मूल्य में एकमुश्त छः रुपये की बढ़ौतरी से अब 450 किसान उनकी सोसायटी से जुड़ गये हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में दूध की गुणवत्ता काफी अच्छी है तथा इसे प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

जिला हमीरपुर की नादौन निवासी सुनीता ने कहा कि कभी किसी ने उम्मीद नहीं की थी कि कोई सरकार दूध के खरीद मूल्य को एक साथ छः रुपये बढ़ाएगी, लेकिन मुख्यमंत्री ने दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए प्रदेश के हजारों किसानों को लाभ पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि पहले अधिकतम 50 पैसे या एक रुपये तक की ही बढ़ौतरी होती थी, लेकिन वर्तमान राज्य सरकार का यह प्रयास सराहनीय है। उन्होंने कहा कि पहले सोसायटी से लोगों को जोड़ने में कठिनाई आती थी, लेकिन अब वे खुद-ब-खुद दूध उत्पादन से जुड़ने लगे हैं।

कुल्लू निवासी रीना देवी ने भी दूध खरीद मूल्य छः रुपये बढ़ाने पर राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया और कहा कि इससे उनकी आय लगभग 4500 रुपये बढ़ी है। पहले प्रतिमाह उन्हें 18,600 रुपये आय होती थी तथा अब वह हर महीने लगभग 22,900 रुपये तक कमा रही हैं। उन्होंने कहा कि पहले लोग मनमर्जी के मूल्य पर दूध खरीदते थे, लेकिन अब वह मिल्कफैड को दूध बेच कर अच्छा मुनाफा कमा रही हैं।

मनाली निवासी पन्ना लाल ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा दूध खरीद मूल्य एक साथ छः रुपये बढ़ाने से प्रदेश के हजारों किसानों को लाभ हुआ है और उन्हें अब 4500 रुपये प्रति माह की अतिरिक्त आय प्राप्त हो रही है। आनी के ओम प्रकाश ने भी रेट बढ़ाने पर धन्यवाद किया।

जिला शिमला के रामपुर बुशैहर निवासी तुला राम ने कहा कि राज्य सरकार की सीधे किसानों से बात करने का प्रयास सराहनीय है, जिसका लाभ किसानों को आने वाले समय में मिलेगा। उन्होंने कहा कि मिल्कफैड के माध्यम से किसानों को 15 दिन में पैसा उनके खाता में आ रहा है। उन्होंने पशु आहार को सस्ता करने और दुधारू पशुओं का बीमा करने का सुझाव भी दिया।

व्यास कामधेनु बिलासपुर के जे. आर. कौंडल ने कहा कि प्रदेश के किसान सौभाग्यशाली हैं कि मुख्यमंत्री ने स्वयं किसानों के साथ संवाद करने की पहल की है। उन्होंने कहा कि वह लंबे समय से सरकार से बातचीत करना चाहते थे, जिसके लिए मुख्यमंत्री ने उन्हें एक मंच प्रदान किया है। उन्होंने कहा कि संस्था गांव के भले के लिए काम कर रही है और 70 ग्राम पंचायतों से प्रतिदिन 40 हजार लीटर दूध एकत्र कर रही है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री किसानों के सच्चे हमदर्द हैं।

मुख्यमंत्री ने बरोटीवाला में आग लगने की घटना के प्रभावितों से मुलाकात की

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने जिला सोलन के औद्योगिक क्षेत्र बरोटीवाला के झाड़माजरी में एक निजी कंपनी में आग लगने की घटना का मौके पर जाकर निरीक्षण किया तथा मृतकों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं प्रकट कीं। उन्होंने अधिकारियों से आग लगने की

घटना के बारे में विस्तार से जानकारी ली और आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। उन्होंने जिला प्रशासन को प्रभावितों को हरसंभव सहायता पहुंचाने के निर्देश दिए।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू लापता व्यक्तियों के परिजनों से भी मिले और उन्हें ढांढस बंधाया। उन्होंने कहा ''आप चिंता न करें, राज्य सरकार दुख की इस घड़ी में आपके साथ पूरी मजबूती के साथ खड़ी है और हर संभव सहायता उपलब्ध करवाई जाएगी''।

पत्रकारों से बात करते हुए ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने आग लगने की घटना पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि प्रशासन द्वारा घटना की जांच की जा रही है और सभी पहलुओं का गहन विश्लेषण किया जाएगा। उन्होंने कहा कि भविष्य में ऐसी घटना दोबारा न हो, इसके लिए फैक्टरी प्रबंधकों के साथ बात कर कानून में आवश्यक बदलाव किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस मामले में एफआईआर दर्ज कर जांच की जा रही है और दोषियों के विरुद्ध कड़ी कारवाई की जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि औद्योगिक क्षेत्रों में स्मार्ट मीटरिंग तथा बिजली की तारों को अंडरग्राउंड करने पर भी विचार किया जाएगा। उन्होंने कहा कि घायलों को पांच-पांच हजार रुपये की त्वरित राहत राशि दी गई है तथा उन्हें कुल 50-50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। इसके अतिरिक्त मृतकों के परिजनों को भी कुल साढ़े छः लाख रुपये प्रति परिवार की आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना में 5 लोगों की मौत हुई है। एक शव की पहचान की जा रही है, जबकि पांच व्यक्ति अभी भी लापता हैं। उन्होंने कहा कि इस घटना में 37 व्यक्ति घायल हुए थे, जिनमें से 13 घायलों को उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी मिल गई है। अब तक प्रभावित परिवारों को 3.05 लाख रुपए की राहत राशि प्रदान की जा चुकी है।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने अस्पताल में उपचाराधीन घायलों का कुशलक्षेम पूछा और उनसे हादसे के बारे में जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री ने उन्हें प्रदेश सरकार की ओर से हर संभव सहायता का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल, मुख्य संसदीय सचिव चौधरी राम कुमार, विधायक के. एल. ठाकुर, उपायुक्त मनमोहन शर्मा सहित अन्य गणमान्य तथा अधिकारी उपस्थित थे।

सड़कों के रख-रखाव के लिए 15 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृतःविक्रमादित्य सिंह

शिमला/शैल। लोक निर्माण एवं शहरी विकास मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने बताया कि प्रदेश में विभिन्न विकास परियोजनाओं के लिए राशि स्वीकृत की गई है।

उन्होंने बताया कि विभिन्न ज़िलों में सड़कों के रख-रखाव एवं अन्य कार्यों के लिए 15 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। इसके तहत हमीरपुर जिला में बागछाल से तलाई वाया कलोल सड़क के लिए 3 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं। शिमला जिला की सैंज-चौपाल-नेरवा -फैडिज़ सड़क की टारिंग व सुदृढ़ीकरण के लिए 3 करोड़ रुपये, मण्डी जिला की मानपुर से सराज सड़क के लिए 3 करोड़ रुपये, हमीरपुर जिला की धमेटा से बड़सर सड़क तथा बड़सर से शाहतलाई सड़क के उन्नयन के लिए भी 3-3 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है।

विक्रमादित्य सिंह ने बताया कि मुख्यमंत्री शहरी आजीविका गारंटी मिशन के तहत विभिन्न शहरी निकायों के लिए 1 करोड़ 74 लाख 28 हजार रुपये की राशि प्रदान करने की प्रशासनिक स्वीकृति प्रदान की गई है। उन्होंने बताया कि इसके अतिरिक्त मशीनरी एवं उपकरण इत्यादि के लिए भी 5001 लाख रुपये की राशि जारी की गई है।

उन्होंने कहा कि सड़क अधोसंरचना के विकास के लिए प्रदेश सरकार कृतसंकल्प है और लोक निर्माण विभाग के माध्यम से इसके लिए समय-समय पर समुचित राशि जारी की जा रही है।

किसी चीज से डरो मत। तुम अद्भुत काम करोगे। यह निर्भयता ही है जो क्षण भर में परम आनंद लाती है।

..... स्वामी विवेकानंद

सम्पादकीय

कांग्रेस को अपनों से ही खतरा है

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी राम मन्दिर प्रमाण प्रतिष्ठा आयोजन के बाद भी चुनावी सफलता को लेकर शंकित है। राजनीतिक विश्लेषण में यह संकेत बिहार झारखण्ड और चण्डीगढ़ के घटनाक्रमों से उभरे हैं। क्योंकि यह सब इण्डिया गठबंधन को चुनाव से पहले तोड़ने के प्रयासों के रूप में देखा जा रहा है। इस गठबंधन में सबसे बड़ा दल कांग्रेस ही है। इसलिये यह प्राय: सीधे कांग्रेस को कमजोर करने के कदम माने जा रहे हैं। ऐसे में यह विश्लेषण आवश्यक हो जाता है कि इसका कांग्रेस पर क्या असर होगा और भाजपा मोदी को क्या लाभ मिलेगा। इस समय 2014 और 2019 में मोदी भाजपा द्वारा जो चुनावी वादे किये गये थे उनका व्यवहारिक परिणाम यही रहा है कि कुछ लोग ही इन नीतियों से व्यक्तिगत रूप से लाभान्वित हुये हैं। जबकि अधिकांश के हिस्से में गरीबी, महंगाई और बेरोजगारी ही आयी है। इसी के परिणाम स्वरूप आज भी 140 करोड़ में से 80 करोड़ सरकारी राशन पर निर्भर हैं। केन्द्र से लेकर राज्यों तक हर सरकार का कर्ज बड़ा है यदि कर्ज न मिल पाये तो शायद सरकारी कर्मचारियों को वेतन भी न दे पाये। हर सरकार चुनावी सफलता के लिये केवल मुफ्ती की घोषणाओं के सहारे टिकी हुयी है। रिजर्व बैंक ने भी मुफ्ती के खतरों के प्रति सचेत किया है। अन्तर्राष्ट्रीय रेटिंग एजेन्सीयों ने भी गंभीर चेतावनी जारी की हुयी है। लेकिन किसी भी सरकार पर इसका कोई असर नहीं है। चाहे वह भाजपा की सरकार हो या गैर भाजपा दलों की। इस परिदृश्य में मोदी सरकार के पास गंभीर आर्थिक प्रश्नों का कोई जवाब नहीं है। इसलिये मोदी सरकार आने वाले चुनाव को धार्मिकता का रंग देने और इण्डिया गठबंधन को कमजोर करने के प्रयास में लगी हुयी है। पिछले दो लोकसभा चुनाव के परिणाम और उसके बाद सरकारी नीतियों का कार्यन्वयन जिस तरह से हुआ है उससे यह धारणा बलवती हो गयी है कि जब तक विपक्ष इकट्ठा होकर सरकार का सामना नहीं करेगा वह भाजपा को हरा नहीं पायेगा। इसी धारणा के परिणाम स्वरुप इण्डिया का जन्म हुआ जबकि इसके सभी प्रमुख घटक किसी न किसी रूप परोक्ष/अपरोक्ष में ई.डी. और सी.बी.आई. जैसी केन्द्रिय एजैन्सीयों का सामना कर रहे थे। इसी वस्तु स्थिति में राहुल गांधी ने भारत जोड़ो यात्रा शुरू की। इस यात्रा में इण्डिया के घटक दलों का साथ नहीं के बराबर था। शायद सभी को यात्रा के सफल होने का सन्देह था। सरकार ने इस यात्रा को असफल करवाने के लिये हर संभव प्रयास किया। राहुल गांधी की सांसदी तक जाने की स्थिति बन गयी। लेकिन जिस अनुपात में यह यात्रा सफल हुई और मध्य प्रदेश राजस्थान और छत्तीसगढ़ में राहुल गांधी की जनसभा में भीड़ देखने को मिली उससे सभी का गणित गड़बड़ा गये। इसी वस्तुस्थिति ने इण्डिया को जन्म दिया। लेकिन तीनों राज्यों के परिणामों ने फिर मनस्थितियां बदली। केन्द्रीय एजैनसीयों की सक्रियता फिर बड़ी। इसी बीच राहुल ने न्याय यात्रा शुरू कर दी। इस न्याय यात्रा में कैसे व्यवधान खड़े किये गये यह भी सबके सामने है। इस तरह जो परिस्थितियों निर्मित हुयी उनमें कांग्रेस को यह प्रमाणित करना था कि मोदी बीजेपी को हटाने के लिये कोई भी बलिदान देने को तैयार है। कांग्रेस के इस आचरण से सरकार और घटक दल फिर परेशान हो उठे। गठबंधन के साथ औपचारिकताएं पूरी करने की जिम्मेदारी राहुल को छोड़कर बाकी नेताओं पर डाल दी गयी। राहुल संगठन को सशक्त बनाने के लिये न्याय यात्रा के माध्यम से फिर जनमानस के बीच उतर गये। केन्द्रीय एजैन्सियां अपने काम में लग गयी। बिहार में नीतिश फिर भाजपा के हो गये। लेकिन नीतिश के पासा बदलने से जो नुकसान नीतिश का हुआ है उससे ज्यादा मोदी शाह का हुआ है। चण्डीगढ़ के घटनाक्रम ने फिर मोदी सरकार पर लोकतंत्र और उसकी व्यवस्थाओं को कमजोर करने का आप पुख्ता कर दिया है। इण्डिया को तोड़ने का आरोप कांग्रेस की बजाये घटक दलों पर आ रहा है। ऐसे में राहुल की न्याय यात्रा के बाद कांग्रेस को कोई नुकसान होने की संभावना नहीं के बराबर रह जाती है। बल्कि लाभ ही मिलने की स्थिति हो जाती है। ऐसे में मोदी का प्रयास अब कांग्रेस को भीतर से तोड़ने का रह जाता है। इसलिये कांग्रेस को अन्य दलों से नहीं वरना कांग्रेसियों से ही खतरा है।

सिखों के मामले को तसल्ली से सुलझाएं, नांदेड़ साहब गुरुद्वारे पर जल्द कोई निर्णय ले केन्द्र सराकर

गौतम चौधरी

गर्म सियसी रुतवों के लिए मशहूर, सूबा पंजाब एक बार फिर यलगार के मूड में दिख रहा है। अमूमन पंजाब या सिखों को दिल्ली की केन्द्रीय सत्ता से अतावत रही रही है लेकिन इस बार मामला सीधे तौर पर धर्म से जुड़ा है और महाराष्ट्र सरकार के एक फैसले ने गुरुपुत्रों को आन्दोलित कर दिया है। दरअसल, महाराष्ट्र की एकनाथ सिंदे सरकार ने विगत दिनों सिखों के पवित्र पांच तख्तों में से एक, नांदेड़ साहब गुरुद्वारा बोर्ड में संशोधन कर दिया। उस संशोधन के तहत अब नांदेड़ साहब गुरुद्वारा बोर्ड में कुल 17 सदस्यों में से 12 सदस्य सरकार के द्वारा नामित किए जाएंगे। यही नहीं श्री शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी अब तक अपने चार सदस्यों को नांदेर साहब मंदिर प्रबंधन के लिए भेजती थी लेकिन सिंदे सरकार के द्वारा 1956 के एक्ट में संशोधन के बाद वह संख्या घट कर दो रह गयी है। इसके अलावा चीफ खालसा दीवान और हजूरी सचखंड दीवान के न मिनेशन को भी समाप्त कर दिया गया है। इतना ही नहीं पहले के कानून में दो सिख सांसदों को भी बोर्ड में शामिल करने का नियम था उसे समाप्त कर दिया गया है। इस मामले पर पंजाब की प्रभावशाली सियासी पार्टी, बादल गुट वाले शिरोमणि अकाली दल ने आपत्ति दर्ज कराई है। सिख समुदाय इस संशोधन को अपने धर्म के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप मान रहा है और आन्दोलन के लिए विवश है।

श्री हजूर अबिचल नगर साहिब अधिनियम 1956 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा संशोधन किए जाने पर सिख समुदाय भड़का हुआ है। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से सिख तीर्थस्थलों के प्रबंधन में सरकारी प्रभाव बढ़ाने की साजिशों को तुरंत रोकने की अपील की है। इधर पूरे देश भर में सिखों ने महाराष्ट्र सरकार के खिलाफ आन्दोलन प्रारंभ कर दिया है।

इस मामले में शिरोमणि अकाली दल के वरिष्ठ नेता सरदार दलजीत सिंह चीमा ने एक ब्यान में कहा है कि ऐसा प्रतीत होता है कि एकनाथ शिंदे सरकार मनमाने ढंग से गुरुद्वारा बोर्ड का नियंत्रण अपने हाथ में लेना चाहती है, जिसे सिख समुदाय कभी बर्दाश्त नहीं करेगा। चीमा ने कहा कि यह कदम सिखों के धार्मिक मामलों में सीधा हस्तक्षेप है। उन्होंने इसे तुरंत रद्द करने की मांग भी की है। इस बीच, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक समिति (एसजीपीसी) हरजिंदर सिंह धामी ने तख्त श्री हजूर साहिब नांदेड़ गुरुद्वारा बोर्ड में सिख संगठनों के सदस्यों की संख्या कम करने की महाराष्ट्र सरकार की कारवाई पर कड़ी आपत्ति जताई है। धामी ने कहा कि नांदेड़ सिख गुरुद्वारा सचखंड श्री हजूर अबचल नगर साहिब अधिनियम 1956 में प्रस्तावित संशोधन सिख समुदाय के मामलों में सीधा हस्तक्षेप है। धामी ने कहा कि महाराष्ट्र सरकार द्वारा नामित सदस्यों की संख्या बढ़ाने और गुरुद्वारा बोर्ड (नांदेड़ में) में सिख संगठनों के सदस्यों को कम करने का निर्णय सिख मंदिरों पर सीधे नियंत्रण लेने का अनाधिकृत प्रयास है। इस तरह के प्रस्ताव से पहले सिखों के साथ कोई संवाद नहीं किया गया।

इस प्रकार सिखों के लगभग प्रत्येक संगठनों ने सिंदे सरकार के फैसले का विरोध किया है। फिलहाल यह विरोध लोकतांत्रिक तरीके से सामने आ रहा है लेकिन पंजाब का जिस प्रकार अंदाज रहा है उसमें इस बात से कतई इन्कार नहीं किया जा सकता है कि यह विरोध केवल लोकतांत्रिक स्तर तक ही सीमित रहेगा। इसकी परिणति हिंसक भी हो सकता है। पंजाब और सिखों का इतिहास आक्रामक रहा है। जब केन्द्र में श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व की सरकार थी उस वक्त भी सिखों के कुछ धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करने की कोशिश की गयी थी। उसका परिणाम पंजाब में आतंकवाद के रूप में सामने आया और उस आतंकवाद का दंश न केवल पंजाब अपितु पूरा देश आज तक झेल रहा है। उस आतंकवाद के कारण पंजाब के लाखों हिन्दुओं को अपनी मातृभूमि छोड़नी पड़ी थी। सरकारी आंकड़ों में बताया गया है कि आतंकवाद के कारण 35 हजार से ज्यादा हिन्दू मारे गए। आतंवाद ने सिखों को भी घाटा पहुंचाया और आज भी आतंकवाद से प्रभावित सिख परिवार उबर नहीं पाये हैं। ऐसा क्यों हुआ, तो इसका सीधा-सा जवाब है, इंदिरा सरकार की छोटी-सी गलती ने पंजाब को उबलने के लिए विवश कर दिया। आज केंद्र की सत्ता में बैठी भारतीय जनता पार्टी के नेता भी पंजाब को लेकर इंदिरा गांधी और कांग्रेस की गलतियों को गिनाते रहे हैं। पंजाब को लेकर कांग्रेस की गलतियों को गिनाने का भाजपायी सिलसिला अनवरत आजतक जारी है।

जहां तक धार्मिक मामलों की बात है, उसमें सत्ता के हस्तक्षेप को लेकर हिन्दू संगठनों का भी सोच सिख जैसा ही है। कई हिन्दू संगठनों का मानना है कि हिन्दू धार्मिक स्थलों के प्रबंधन में प्रशासन का हस्तक्षेप नाजायज है। इसे हिन्दू संतों और प्रबुद्धजनों की संस्थाओं के द्वारा संचालित किया जाना चाहिए। हिन्दू संगठनों का तो यहां तक मानना है कि धार्मिक शहरों का प्रबंधन विशुद्ध रूप से हिन्दू संगठन या न्यासों के हाथ में होना चाहिए। फिलहाल सरकार इस दिशा में पहल करने के पक्ष में नहीं दिख रही है। हिन्दुओं का मानना है कि इस मामले में सरकार मुसलमानों को ज्यादा तरजीह देती है। उनके धार्मिक मामलों में सरकारी हस्तक्षेप नर्ही के बराबर होता है, जबकि हिंदुओं के मामले में सरकार ही सारे धार्मिक न्यास बोर्डों का संचालन कर रही है।

जहां तक सिख धार्मिक स्थलों के प्रबंधन की बात है तो सदा से उसका प्रबंधन अन्य धर्मों की तुलना में बेहतर रहा है। इसे और बेहतर करने के लिए सरकार को बाहर से सहयोग करना चाहिए न कि उसमें अपना हस्तक्षेप बढ़ाना चाहिए। अन्य अल्पसंख्यक समुदायों की तरह इधर के दिनों में सिखों के अंदर भी यह बात घर कर गया है कि हिन्दुओं के हित का दावा करने वाली नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार उसकी पहचार को खत्म करने की कोशिश कर सकती है। पंजाब या बाहर के देशों में सोशल मीडिया के माध्यम से यह प्रचार तेजी से किया जा रहा है। नांदेड़ का मामला इस नकारात्मक प्रचार अभियान को और मजबूत बनाएगा। इस बात को लेकर केन्द्र सरकार को भी सतर्क हो जाना चाहिए और जल्द ही नांदेड़ साहब गुरुद्वारा मामले को लेकर कोई ठोस पहल करनी चाहिए।

अनाथ व निराश्रित बच्चों का भविष्य संवार रही 'मुख्यमंत्री सुख–आश्रय योजना'

शिमला। परिवार तथा माता–पिता हमें सुखदायी एवं सुरक्षित माहौल प्रदान करते हैं। बच्चे की परवरिश तथा शिक्षा से लेकर उनके भविष्य को उज्ज्वल बनाने में उनका उल्लेखनीय योगदान रहता है। प्रदेश में अनाथ बच्चों का भविष्य संवारने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा मुख्यमंत्री सुख–आश्रय योजना शुरू की गयी है, जिसके अंतर्गत अब तक 4 हजार बच्चों को 'चिल्ड्रन आफ द स्टेट' के रूप में अपनाया गया है। माता एवं पिता के रूप में उनकी देखभाल की सम्पूर्ण जिम्मेदारी निभाने का दायित्व सरकार ने सम्भाला है।

अनाथ एवं निराश्रित बच्चों को अपनत्व, सुरक्षा एवं संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने हाल ही में जिला कांगड़ा के ज्वालामुखी के लुथान में सुख–आश्रय ग्राम परिसर का शिलान्यास किया है। इस एकीकृत परिसर में विश्व स्तरीय सुविधाओं के साथ लगभग 400 निराश्रितों के रहने की क्षमता होगी।

परिसर में ई–लाईब्रेरी, अस्पताल, वैलनेस सेंटर, प्रार्थना कक्ष, मंदिर, कॉमन रूम, बहुउद्देशीय डिपार्टमेंटल स्टोर, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र व पार्क आदि सुविधाएं होंगी। इसके अलावा टेबल टेनिस, बैडमिंटन, योग, स्वीमिंग पूल, प्ले स्टेशन, जिम सहित अन्य इंडोर व आउटडोर खेलों से सम्बधित स्तरीय सुविधाएं उपलब्ध होंगी। परिसर में बच्चों, महिलाओं व वृद्धजनों के लिए अलग–अलग आश्रय स्थल निर्मित किए जाएंगे।

मुख्यमंत्री ने कार्यभार सम्भालने के उपरांत अपने पहले ही निर्णय में अनाथ बच्चों के कल्याण को प्राथमिकता दी है। इसे मूर्तरूप प्रदान करने के लिए मुख्यमंत्री सुख–आश्रय कोष गठित कर लोगों से उदारतापूर्वक दान की अपील की गयी और अपेक्षित सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। अनाथ बच्चों के खुशहाल जीवन के लिए 4 हजार रुपये प्रतिमाह जेब खर्च, वार्षिक भ्रमण के दौरान 3 सितारा होटल में ठहरने की सुविधा, शिक्षा के लिए आवश्यक निधि, उत्सव भत्ता तथा अन्य सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं। मुख्यमंत्री सुख–आश्रय योजना के कार्यान्वयन के फलस्वरूप हिमाचल को अनाथ बच्चों के लिए कानून के तहत योजना बनाने वाला देश का पहला राज्य होने का गौरव प्राप्त हुआ है।

राज्य सरकार निराश्रितों के लिए प्रदेश भर में कई बाल संरक्षण संस्थानों का संचालन भी कर रही है। मुख्यमंत्री का कहना है कि बाल संरक्षण संस्थानों के उचित संचालन से प्रदेश सरकार सभी निराश्रित बच्चों के सम्पूर्ण विकास के लिए आदर्श माहौल प्रदान कर उनकी शारीरिक, मानसिक, आलथक, सामाजिक एवं भावनात्मक आवश्यकताओं को पूरा कर रही है। इन बाल संरक्षण संस्थानों में टच–टेक्नोल जी से लैस स्मार्ट बोर्ड, इंडोर व आउटडोर खेल सुविधाएं, संगीत कक्ष, मनोरंजन कक्ष, चिकित्सा कक्ष व अन्य विश्व स्तरीय सुविधाएं विकसित की जा रही हैं।

मुख्यमंत्री सुख–आश्रय योजना का मुख्य उद्देश्य बच्चों को आश्रय स्थलों में पारिवारिक माहौल, प्रत्येक बच्चे को शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल व पोषक आहार प्रदान करना है। राज्य सरकार सुनिश्चित कर रही है कि इन बच्चों को श्रेष्ठ विद्यालयों, व्यावसायिक संस्थानों, तकनीकी तथा प्रोफेशनल महाविद्यालयों में शिक्षित किया जाए तथा इस दौरान वे अपने शौक पूरे कर अपना भरपूर बचपन जी सकें। इन बच्चों को आत्मनिर्भर, प्रगतिशील, जिम्मेवार नागरिक के साथ–साथ राष्ट्र निर्माण में योगदान देने के काबिल बनाना इस योजना का दीर्घकालिक उद्देश्य है।

योजना के तहत नि:शुल्क गुणात्मक शिक्षा, कोचिंग, भाषा तथा सम्पर्क कौशल का प्रशिक्षण, प्रतिमाह पिकनिक, मार्गदर्शन, कैरियर परामर्श, विवाह अनुदान, प्रत्येक बच्चे के लिए आवर्ती जमा खाता खोलना, मकान बनाने के लिए भूमि आवंटन तथा अनुदान, स्वरोजगार के लिए वित्तीय सहायता तथा अन्य सुविधाएं प्रदान करने पर बल दिया जा रहा है।

यह योजना निराश्रित, एकल अथवा निराश्रित नारियों, दिव्यांगजनों तथा वृद्धजनों जैसे समाज के कमजोर वर्गों को संस्थागत तथा गैर संस्थागत देखभाल सुविधा भी प्रदान कर रही है ताकि सामाजिक सहयोग तथा भावनात्मक जुड़ाव के साथ गुणात्मक सुधार लाते हुए उनका सम्मानजनक जीवनयापन सुनिश्चित किया जा सके।

मुख्यमंत्री सुख–आश्रय योजना के तहत इस वित्तीय वर्ष के दौरान बाल संरक्षण संस्थानों के 1084 आश्रितों को 2 करोड़ 15 लाख 37 हजार रुपये तथा 2718 अनाथ बच्चों को 4 हजार रुपये प्रतिमाह जेब खर्च के रूप में 4 करोड़ 34 लाख 88 हजार रुपये वितरित किए गए हैं। इन संस्थानों के 1084 बच्चों को वस्त्र भत्ते के तहत 5 हजार रुपये प्रति बच्चे की दर से 54 लाख 20 हजार रुपये वितरित किए गए हैं। इन बच्चों को उत्सव भत्ते के रूप में 59 लाख 81 हजार 500 रुपये तथा पोषक आहार के लिए 32 लाख 52 हजार रुपये वितरित किए गए हैं। संस्थानों के मेधावी विद्यार्थियों को 30 लैपटॉप भी प्रदान किए गए हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे 48 लाभार्थियों को 28 लाख 30 हजार 707 रुपये तथा व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 17 लाभार्थियों को 26 लाख 95 हजार 994 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान की गयी है। इसके अतिरिक्त, स्टार्ट–अप के लिए लाभार्थियों को 6 लाख रुपये प्रदान किये गये।

आंगनवाड़ी वर्कर्ज को आयुष्मान भारत के तहत 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य कवरेज

शिमला। आंगनवाड़ी सेवाएं एक केंद्र प्रायोजित योजना है और योजना को लागू करने का कार्य राज्य सरकार/केंद्र शासित प्रदेश प्रशासन के दायरे में आता है। विभिन्न स्तरों पर रिक्त पदों को भरने के संबंध में राज्य सरकारों/केंद्र शासित प्रदेश प्रशासनों के साथ निरंतर बातचीत/वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से संबद्ध मामले उठाये जाते है। साथ ही, राज्यों/ केंद्रशासित प्रदेशों से उचित मानव संसाधन नियोजन सुनिश्चित करने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं के संबंध में एक समान सेवानिवृत्ति तिथि यानी प्रत्येक वर्ष 30 अप्रैल को अपनाने का अनुरोध किया गया है।

31 दिसंबर 2023 तक देश में 13,48,135 आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और 10,23,068 आंगनवाड़ी सहायिकाएं थीं।

सरकार ने 1 अक्तूबर, 2018 से मुख्य आंगनवाड़ी केंद्रों में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय 3,000/– रुपये से बढ़ाकर 4,500/– रुपये प्रति माह कर दिया है (मिनी–आंगनवाड़ी केंद्रों पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को 2,250/– रूपये से बढ़ाकर 3,500/– रूपये प्रति माह (आंगनवाड़ी सहायिकाओं 1,500/– रूपये से बढ़ाकर 2,250/– रूपये प्रति माह तक (और आंगनवाड़ी सहायिकाओं के लिए प्रति माह 250/– रुपये और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए 500/– रुपये के प्रदर्शन से जुड़े प्रोत्साहन की शुरुआत की। इसके अलावा, राज्य/केंद्रशासित प्रदेश अपने स्वयं के संसाधनों से इन पदाधिकारियों को अतिरिक्त मौद्रिक प्रोत्साहन/मानदेय का भुगतान भी कर रहे हैं, जो अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग है। वर्तमान में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय बढ़ाने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी सहायिकाओं को प्रोत्साहित करने और प्रोत्साहित करने की दृष्टि से, निम्नलिखित सहित विभिन्न कदम/पहल की गई हैं:

पदोन्नति: मंत्रालय द्वारा जारी सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 दिशानिर्देशों के अनुसार, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए पदोन्नति के अवसरों में वृद्धि की गई है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के 50 प्रतिशत पद 5 वर्ष के अनुभव वाली आंगनवाड़ी सहायिकाओं की पदोन्नति से भरे जाएंगे और पर्यवेक्षकों के 50 प्रतिशत पद 5 वर्ष के अनुभव वाली आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की पदोन्नति से भरे जाएंगे, बशर्ते कि अन्य मानदंड पूरे हों।

छुट्टी : आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को 180 दिनों के मातृत्व अवकाश की सवैतनिक अनुपस्थिति, गर्भपात/ गर्भपात पर एक बार 45 दिनों के लिए सवैतनिक अनुपस्थिति की अनुमति दी गई है। साथ ही, 20 दिन की वार्षिक छुट्टियां भी मान्य हैं।

वर्दी: आंगनवाड़ी कार्यकर्ता/ आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को दो वर्दी (साड़ी /सूट प्रति वर्ष) देने का प्रावधान है।

सामाजिक सुरक्षा बीमा योजनाएं : प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई) के तहत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को दो लाख रुपये के जीवन कवर (जीवन जोखिम, किसी भी कारण से मृत्यु को कवर) के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/एडब्ल्यूएच को बीमा लाभ प्रदान किया गया है।

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के तहत 18 से 50 वर्ष और 18 – 59 वर्ष की आयु समूह में आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी सहायिकाओं को दो लाख रुपये (दुर्घटना मृत्यु और स्थायी पूर्ण विकलांगता)/एक लाख रुपये (आंशिक लेकिन स्थायी विकलांगता) का बीमा लाभ प्रदान किया गया है। प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना अब, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/आंगनवाड़ी सहायिकाओं को प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई) और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) के तहत उनके बैंक खातों के माध्यम से बीमा कवर प्रदान करने और आंगनवाड़ी सेवा योजना के तहत निर्धारित लागत साझाकरण अनुपात पर राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों को प्रीमियम भुगतान के लिए धनराशि जारी करने का निर्णय लिया गया है।

प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज के तहत बीमा कवर : कोविड महामारी से संबंधित कार्यों में शामिल अग्रिम पंक्ति के आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और आंगनवाड़ी सहायिका को 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज' के तहत 50 लाख रुपये का बीमा कवर प्रदान किया गया है, इसमें कुछ शर्तें शामिल की गई हैं।

प्रधानमंत्री श्रम योगी मान–धन (पीएम–एसवाईएम): राज्य सरकारों/केंद्रशासित प्रदेश प्रशासनों से अनुरोध किया गया है कि वे पात्र आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं/ आंगनवाड़ी सहायिकाओं को प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन (पीएम–एसवाईएम) पेंशन योजना के तहत स्वयं के नामांकन के लिए प्रोत्साहित करें, जो एक स्वैच्छिक है और वृद्धावस्था सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए देश में असंगठित क्षेत्रों के लिए अंशदायी पेंशन योजना है।

सेवानिवृत्ति की तारीख :राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों से उचित मानव संसाधन नियोजन सुनिश्चित करने के लिए आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं के संबंध में एक समान सेवानिवृत्ति तिथि यानी प्रत्येक वर्ष 30 अप्रैल को अपनाने का अनुरोध किया गया है।

पोषण ट्रैकर के माध्यम से सूचना प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना : सक्षम आंगनवाड़ी और पोषण 2.0 (मिशन पोषण 2.0) के तहत आंगनवाड़ी केंद्रों पर वितरण सहायता प्रणालियों को सुदृढ़ बनाने और पारदर्शिता लाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी प्रणालियों का लाभ उठाया गया है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा 1 मार्च, 2021 को एक महत्वपूर्ण शासन उपकरण के रूप में 'पोषण ट्रैकर' एप्लिकेशन को शुरू किया गया था। आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को स्मार्टफोन के साथ तकनीकी रूप से सशक्त बनाया गया है। मोबाइल एप्लिकेशन ने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले रजिस्टरों को डिजिटल और स्वचालित कर दिया है जिससे उनके काम की गुणवत्ता में सुधार करने में भी मदद मिली है। पोषण अभियान के अंतर्गत, सर्वप्रथम एक डिजिटल क्रांति की शुरुआत हुई जब आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को मोबाइल उपकरणों से सशक्त बनाया गया। पोषण ट्रैकर एप्लिकेशन में वास्तविक समय डेटा कैप्चर करने के लिए, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रति आंगनवाड़ी कार्यकर्ता को प्रति वर्ष 2000/–रूपये की दर से इंटरनेट कनेक्टिविटी शुल्क प्रदान किया जाता है।

सरकार ने मिनी आंगनवाड़ी केन्द्रों को नियमित आंगनवाड़ी केंद्रों में अपग्रेड करने के आदेश जारी किए हैं। इसके कारण, मौजूदा मिनी आंगनवाड़ी केंद्रों की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का मानदेय बढ़कर 4,500/–रुपये प्रति माह हो गया है।

2024–25 के अंतरिम बजट में, सरकार ने देश भर के सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को शामिल करने के लिए आयुष्मान भारत के कवरेज का विस्तार किया है। यह सभी आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी सहायिकाओं को माध्यमिक और तृतीयक चिकित्सा देखभाल के लिए प्रति परिवार सालाना 5 लाख रुपये तक का स्वास्थ्य कवरेज प्रदान करेगा ।

वर्ष 2023–24 में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के तहत 60,000 करोड़ रुपये आवंटित

शिमला। महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना महात्मा गांधी नरेगा एक मांग आधारित मजदूरी रोजगार योजना है और इसके लिए राज्य/केंद्र शासित प्रदेश को वर्ष के दौरान ''सहमत'' श्रम बजट और राज्यों के निष्पादन के आधार पर धन जारी किया जाता है। जमीनी स्तर पर काम की मांग को पूरा करने के लिए मंत्रालय आवश्यकता पड़ने पर वित्त मंत्रालय से अतिरिक्त धनराशि मांगता है। राज्यों/केंद्र शासित प्रदेशों को धन जारी करना एक सतत प्रक्रिया है और केंद्र सरकार इस योजना के कार्यान्वयन के लिए राज्यों को धन उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

भारत सरकार ने वित्त वर्ष 2023–24 के बजट अनुमान में महात्मा गांधी नरेगा के तहत 60,000 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं। इसके अलावा अनुदान की पहली अनुपूरक मांग में बजटीय आवंटन को बढ़ाकर 74, 524.29 करोड़ रुपये कर दिया गया है।

महात्मा गांधी नरेगा की धारा 61 के अनुसार, केंद्र सरकार अधिसूचना द्वारा अपने लाभार्थियों के लिए मजदूरी की दर निर्दिष्ट कर सकती है। तदनुसार, ग्रामीण विकास मंत्रालय प्रत्येक वित्तीय वर्ष में राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों के लिए महात्मा गांधी नरेगा की मजदूरी दर अधिसूचित करता है। ग्रामीण विकास मंत्रालय महंगाई के मद्देनजर महात्मा गांधी नरेगा के श्रमिकों को राहत पहुंचाने के लिए कृषि श्रमिकों के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचकांक सीपीआई–एएल में बदलाव के आधार पर हर वित्तीय वर्ष में मजदूरी दर में संशोधन करता है। मजदूरी दर प्रत्येक वित्तीय वर्ष के 1 अप्रैल से लागू की जाती है। हालांकि प्रत्येक राज्य/केंद्र शासित प्रदेश, केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचित मजदूरी दर से अधिक मजदूरी प्रदान कर सकता है।

महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम महात्मा गांधी नरेगा की अनुसूची–I में उल्लिखित प्रावधानों के अनुसार, मजदूरी की मांग करने वाले श्रमिक, मस्टर रोल बंद होने के सोलहवें दिन से बाद की देरी के लिए प्रति दिन अवैतनिक मजदूरी के 0.05 प्रतिशत की दर से इस देरी के लिए मुआवजे का भुगतान प्राप्त करने के हकदार होंगे।

यह जानकारी केंद्रीय ग्रामीण विकास राज्य मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति ने राज्यसभा में एक लिखित उत्तर में दी।

बद्दी में उपमण्डलाधिकारी कार्यालय खोलने को स्वीकृति

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू की अध्यक्षता में आयोजित प्रदेश मंत्रिमण्डल की बैठक में हिमाचल प्रदेश 14वीं विधानसभा के बजट सत्र पर दिये जाने वाले राज्यपाल के अभिभाषण को स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमण्डल ने हिमाचल प्रदेश राज्य चयन आयोग के संदर्भ में प्रक्रिया एवं कार्य संचालन नियम बनाने को भी स्वीकृति प्रदान की।

मंत्रिमण्डल ने भंग किये गये हिमाचल प्रदेश कर्मचारी चयन आयोग, हमीरपुर के तहत पुलिस जांच के कारण लम्बित विभिन्न परीक्षा परिणामों के कानूनी पहलुओं के परीक्षण के लिए उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री की अध्यक्षता एक मंत्रिमण्डलीय उप-समिति गठित करने को स्वीकृति प्रदान की। उद्योग मंत्री हषवर्धन चौहान, राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी, लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह और आयुष मंत्री यादविन्द्र गोमा इस उप-समिति के सदस्य होंगे।

मंत्रिमण्डल ने राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी की अध्यक्षता में विभिन्न विभागों को आवंटित तथा पट्टे पर दी गई और लम्बी अवधि से अनुपयोगी पड़ी राजस्व भूमि की समीक्षा के लिए एक मंत्रिमण्डलीय उप-समिति गठित करने का निर्णय लिया है। ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह, लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह और नगर एवं ग्राम नियोजन मंत्री राजेश धर्माणी इस उप-समिति के सदस्य होंगे।

मंत्रिमण्डल ने ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह की अध्यक्षता में विभिन्न विभागों में अनुपयोगी पड़े रिक्त भवनों की समीक्षा के लिए एक मंत्रिमण्डलीय उप-समिति गठित करने का भी निर्णय लिया। नगर एवं ग्राम नियोजन मंत्री राजेश धर्माणी तथा आयुष मंत्री यादविन्द्र गोमा इस उप-समिति के सदस्य होंगे।

मंत्रिमण्डल ने सोलन जिला के बद्दी में उपमण्डलाधिकारी (नागरिक) कार्यालय खोलने को भी स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में सोलन जिला के पट्टा और कांगड़ा जिला के पालमपुर में खण्ड विकास कार्यालय खोलने को स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमण्डल ने हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवाएं के तहत सीधी भर्ती के माध्यम से 5 पद भरने का निर्णय लिया। यह पद हिमाचल प्रदेश प्रशासनिक सेवाएं संयुक्त प्रतियोगी परीक्षा के माध्यम से भरे जाएंगे।

मंत्रिमण्डल ने राजस्व विभाग में तहसीलदार श्रेणी 'ए' के 9 पद और नायब तहसीलदार श्रेणी 'ए' के 19 पद भरने का भी निर्णय लिया।

मंत्रिमण्डल ने सोलन जिला की बद्दी तहसील के झाड़माजरी में आवश्यक पदों के सृजन सहित नया पटवार-वृत्त सृजित करने को भी स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में योजना विभाग में सीधी भर्ती के माध्यम से विभिन्न श्रेणियों के 7 पद भरने को भी स्वीकृति प्रदान की गई।

मंत्रिमण्डल ने किन्नौर और लाहौल-स्पिति में सहायक पर्यटन विकास अधिकारी कार्यालयों के सुचारू संचालन के लिए विभिन्न श्रेणियों के 6 पद सृजित कर भरने को भी स्वीकृति प्रदान की।

बैठक में मिशन वात्सल्य योजना के अंतर्गत जिला बाल संरक्षण अधिकारी के 4 पद भरने का भी निर्णय लिया गया।

राजेश धर्माणी ने नई दिल्ली में केंद्रीय शिक्षा मंत्री से भेंट की

शिमला/शैल। तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक एवं औद्योगिक प्रशिक्षण मंत्री, राजेश धर्माणी ने नई दिल्ली में केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान से भेंट की। उन्होंने हिमाचल में भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान स्थापित करने का आग्रह किया। साथ ही तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास से सम्बंधित अन्य नए प्रस्तावों सहित लम्बित मामलों पर भी चर्चा की।

राजेश धर्माणी ने कहा कि भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान स्थापित होने से न केवल प्रदेश अपितु देश के वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र को विस्तार मिल सकेगा। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश उच्चतर शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी बन कर उभरा है और यहां भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मण्डी, अखिल भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान ऊना, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर और केंद्रीय विश्वविद्यालय सहित सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र में कई प्रतिष्ठित संस्थान स्थापित हैं। यह संस्थान उच्चतर शिक्षा को मजबूत आधार प्रदान करते हुए देशभर की बेहतरीन प्रतिभाओं को अनुसंधान के लिए एक उत्कृष्ट तंत्र भी प्रदान कर रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इस संस्थान के लिए भूमि प्रदान करने सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए दृढ़संकल्प है। उन्होंने कहा कि हिमालयी पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए यह संस्थान जटिल पर्यावरणीय उपायों में योगदान सुनिश्चित करेगा तथा प्रदेश के सतत विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इस योजना को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए केंद्र सरकार और सभी हितधारकों के साथ मिलकर कार्य करने के लिए उत्सुक है।

राजेश धर्माणी ने कहा कि राज्य सरकार उद्योगों सहित अन्य सम्बद्ध क्षेत्रों की आवश्यकताओं को पूरा करने के दृष्टिगत वर्तमान में स्थापित तकनीकी एवं व्यावसायिक संस्थानों को स्तरोन्नत करने तथा नए संस्थान स्थापित करने पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रही है। इन संस्थानों में नए पाठयक्रम शुरू किए जा रहे हैं और युवाओं को नई तकनीकों में पारंगत करने के लिए उन्नत प्रयोगशालाओं और अन्य आधारभूत ढांचे

को मजबूत किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इसके लिए प्रचुर धनराशि की आवश्यकता है। उन्होंने प्रदेश में अंतर्राष्ट्रीय कौशल केंद्र स्थापित करने का आग्रह करते हुए कहा कि इससे हिमाचल का युवा विदेशों में स्वास्थ्य एवं सामाजिक देखभाल, आतिथ्य, रीयल एस्टेट तथा वाणिज्य सेवाओं सहित अन्य क्षेत्रों में रोजगार के अवसर प्राप्त करने के लिए सक्षम हो सकेगा।

उन्होंने हिमाचल प्रदेश कौशल विकास निगम शिमला में युवाओं को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप परामर्श, कौशल परीक्षण और प्रमाणन इत्यादि की सुविधा के दृष्टिगत राष्ट्रीय कौशल विकास निगम से एक टीम स्थाई रूप से तैनात करने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा कि उभरती प्रौद्योगिकी के दृष्टिगत प्रदेश के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में उत्कृष्टता केंद्र स्थापित करने के लिए कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्रालय से सहयोग अपेक्षित है ताकि औद्योगिक 4.0 संकल्पना के तहत मैकेट्रॉनिक्स लैब, नवीकरणीय ऊर्जा इत्यादि क्षेत्रों के लिए कार्यबल तैयार किया जा सके। उन्होंने तकनीकी संस्थानों में ग्रिड से जुड़े रूफटॉप सौर ऊर्जा संयंत्र स्थापित करने में सहयोग का भी आग्रह किया।

उन्होंने बहुतकनीकी संस्थानों के माध्यम से सामुदायिक विकास योजना के तहत वर्ष 2023-24 के लिए निधि जारी करने का भी आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत प्रदेश के छः बहुतकनीकी संस्थान चयनित किए गए हैं। साथ ही वर्ष 2024-25 के लिए योजना के तहत अन्य संस्थान चयनित करने का भी आग्रह किया।

राजेश धर्माणी ने औद्योगिक मूल्य संवर्धन के लिए कौशल सुदृढ़ीकरण परियोजना के तहत निधि समय पर जारी करने तथा इस परियोजना को 31 मई, 2024 से आगे बढ़ाने का भी आग्रह किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने तकनीकी शिक्षा में बहुविषयक शिक्षा और अनुसंधान सुधार योजना के तहत हिमाचल के चयनित अभियांत्रिकी महाविद्यालयों और बहुतकनीकी संस्थानों को प्रदान की जाने वाली क्रमशः 10 करोड़ रुपये एवं 6 करोड़ रुपये की राशि शीघ्र जारी करने का आग्रह करते हुए कहा कि इसके लिए गत वर्ष केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय को प्रस्ताव भेजा जा चुका है।

केंद्रीय मंत्री ने सभी विषयों को ध्यानपूर्वक सुना और शीघ्र ही उचित कदम उठाने का आश्वासन दिया।

भुन्तर हवाई अड्डे के विस्तार के लिए प्राप्त हुई वन स्वीकृति

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि भुन्तर हवाई अड्डे के विस्तार के लिए वन स्वीकृति प्राप्त हो गई है। इससे कुल्लू घाटी की सुरम्य वादियों के प्रवेश द्वार के रूप में महत्वपूर्ण इस हवाई पट्टी के विस्तार का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

उन्होंने कहा कि इस परियोजना के विस्तार के लिए वन (संरक्षण) अधिनियम के तहत आवश्यक स्वीकृतियां सुनिश्चित करते हुए अब हवाई अड्डे के विस्तारीकरण का कार्य आरम्भ हो सकेगा। नागरिक उडयन महानिदेशालय द्वारा तय नियामक मानकों तथा विस्तारित सुरक्षा उपायों के दृष्टिगत यह स्वीकृतियां आवश्यक थीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि कुल्लू घाटी में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने में भुन्तर हवाई अड्डे की महत्वपूर्ण भूमिका है। यहां तक हवाई सेवाओं के माध्यम से बड़ी संख्या में पर्यटक कुल्लू तथा लाहौल घाटी की सुन्दर वादियों में आसानी से पहुंचते हैं। उन्होंने कहा कि अमृतसर से कुल्लू के लिए अब सीधी उड़ानें शुरू की गई हैं और ऐसे में देश-विदेश के यात्रियों को इस हवाई अड्डे के विस्तार से लाभ होगा।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश में पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार दृढ़ संकल्प है और 50 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी के साथ वर्तमान सरकार ने पर्यटन क्षेत्र के लिए तीन हजार करोड़ रुपये का बजट आबंटन किया है। उन्होंने कहा कि बागवानी और जलविद्युत के उपरांत पर्यटन क्षेत्र हिमाचल की आर्थिकी की रीढ़ है और इस प्रमुख क्षेत्र से हजारों परिवार जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि राज्य सरकार पर्यटन गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए हर सम्भव कदम उठा रही है। इसके तहत आधारभूत ढांचे को मजबूत करते हुए प्रदेश में पर्यटकों के भ्रमण व ठहराव को यादगार बनाने के लिए उन्हें उत्कृष्ट सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने हिमाचल में प्रतिवर्ष पांच करोड़ पर्यटकों को आकर्षित करने का लक्ष्य रखा है। इस दिशा में प्रदेश सरकार द्वारा प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं।

कल्याणकारी योजनाओं का सुचारू क्रियान्वयन सुनिश्चित करें:डॉ. शांडिल

शिमला/शैल। स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल ने अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक एवं विशेष रूप से सक्षम वर्गों का सशक्तिकरण विभाग की बैठक की अध्यक्षता करते हुए विभाग के तहत क्रियान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं की प्रगति की समीक्षा की।

उन्होंने कहा कि स्वर्ण जयंती आश्रय योजना के तहत अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्गों के पात्र परिवारों को गृह निर्माण के लिए डेढ़ लाख रुपए प्रति परिवार प्रदान किए जा रहे हैं। उन्होंने इस योजना के तहत प्राप्त आवेदनों के तीव्र निपटारे के लिए एक समुचित प्रणाली विकसित करने के निर्देश दिए ताकि पात्र परिवारों को योजना का समय पर लाभ सुनिश्चित किया जा सके। उन्होंने इस योजना के तहत नए लाभार्थियों को चिन्हित करने के भी निर्देश दिए।

डॉ. शांडिल ने कहा कि अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति वर्गों को अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम के तहत मुआवजा एवं पुनर्वास का प्रावधान किया गया है। उन्होंने कहा कि सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता सुनिश्चित करने के दृष्टिगत इसके सुचारू क्रियान्वयन पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार इस बारे में व्यापक स्तर पर जागरूकता लाते हुए सामाजिक बदलाव की दिशा में भी सार्थक कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि समाज के कमजोर एवं वंचित वर्गों के उत्थान व पुनर्वास के लिए बजट का समुचित प्रावधान किया गया है।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने कहा कि प्रदेश में 23 देखभाल केंद्र/परामर्श केंद्र एवं हेल्पलाइन, 7 वरिष्ठ नागरिक सुविधा केंद्र और 11 वृद्ध आश्रम संचालित किए जा रहे हैं। उन्होंने समृद्ध वर्गों सहित अन्य लोगों से इन केंद्रों के संचालन में उदारतापूर्वक योगदान देने का आहवान किया ताकि वृद्ध लोग सम्मानजनक जीवन यापन कर सकें। उन्होंने युवाओं का भी आहवान किया कि वे अपने परिवार में वृद्धजनों की देखरेख पर विशेष ध्यान दें ताकि उन्हें जीवन के इस पड़ाव में किसी भी असुविधा का सामना न करना पड़े। वैश्विक स्तर के वृद्ध आश्रम स्थापित करने की महत्ता पर बल देते हुए मंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार इस दिशा में आवश्यक कदम उठा रही है।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि इस पहल से युवाओं के कौशल में निखार लाते हुए उन्हें जीवनयापन के लिए समुचित अवसर सुनिश्चित हो रहे हैं। उन्होंने प्रशिक्षण के लिए उत्कृष्ट संस्थानों को शामिल करने पर बल देते हुए कहा कि राज्य सरकार ऐसे कार्यक्रमों के लिए समुचित धन एवं आधारभूत ढांचा उपलब्ध करवा रही है।

बैठक में राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न दिव्यांगता योजनाओं की भी समीक्षा की गई। उन्होंने कहा कि दिव्यांगता से सम्बंधित मामलों की समय पर पहचान और जांच तथा दिव्यांगता कार्ड के प्रावधानों को और सुगम बनाया जाए ताकि लाभार्थियों को इन सुविधाओं का समुचित लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि सामाजिक कल्याण से जुड़ी इन योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन में जिला एवं तहसील स्तर पर तैनात अधिकारियों की प्रमुख भूमिका है और ऐसे में उन्हें समर्पित भाव से कार्य करते हुए जरूरतमंदों की हरसम्भव मदद करनी चाहिए।

सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने अधिकारियों से इन योजनाओं के लिए प्रदत्त राशि का समुचित उपयोग सुनिश्चित करने को भी कहा ताकि पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करते हुए आधारभूत ढांचे का सृजन और कौशल विकास की दिशा में ठोस कार्य किया जा सके।

बैठक में इंदिरा गांधी महिला सम्मान निधि योजना 2023, स्वर्ण जयंती आश्रय योजना, प्रधानमंत्री अनुसूचित जाति अभ्युदय योजना (आदर्श ग्राम योजना), प्रधानमंत्री जन विकास कार्यक्रम, अनुसूचित जाति विकास कार्यक्रम सहित अन्य विभागीय योजनाओं की समीक्षा भी की गई।

प्रदेश की खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए सरकार तैयार कर रही नयी खेल नीतिःमुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि प्रदेश में खेल ढांचे को सुदृढ़ करने के लिए सरकार एक नये व्यापक खेल नीति ला रही है। इस खेल नीति का मुख्य उद्देश्य प्रदेश में उभरती खेल प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ खिलाड़ियों को उत्कृष्ट सुविधाएं उपलब्ध करवाना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में खिलाड़ियों को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाते हुए खेल स्तर को और बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों को पर्याप्त संसाधन और सुविधाएं मुहैया करवाना सरकार की प्राथमिकता है और उभरते खिलाड़ियों के कौशल को और निखारने तथा खेलों में उत्कृष्टता हासिल करने की दिशा में कार्य कर रही है। इस लक्ष्य के दृष्टिगत ही नयी खेल नीति तैयार की गयी है।

उन्होंने कहा कि प्रस्तावित खेल नीति के अन्तर्गत अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिमाचल का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ियों को दी जाने वाली पुरस्कार राशि में उल्लेखनीय वृद्धि की जाएगी। यह कदम न केवल खिलाड़ियों को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित करेगा, अपितु विश्व स्तरीय प्रतियोगिताओं में देश और प्रदेश का प्रतिनिधित्व करने वाले एथलीटों के अथक परिश्रम और प्रयासों को पुरस्कृत भी करेगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार खेल अधोसंरचना को सुदृढ़ कर उन्नत सुविधाएं व खेल प्रतिभाओं को निखारने के लिए एक सक्षम वातावरण उपलब्ध करवाने के लिए प्रतिबद्ध है। प्रदेश की कई खेल हस्तियों ने अन्तरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है और सरकार उत्कृष्ट खेल ढांचा व अन्य सुविधाएं उपलब्ध करवाते हुए उनके भविष्य को संवारने के लिए दृढ़ संकल्पित है ताकि वे देश और प्रदेश का नाम रोशन कर सकें।

ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि नई नीति खेल प्रतिभाओं को निखारते हुए उत्कृष्टता को बढ़ावा देने और हिमाचल को देश के खेल कौशल केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में एक ठोस कदम है।

दिव्यांगजनों के कल्याण पर दिया जा रहा विशेष ध्यानःडॉ.शांडिल

शिमला/शैल। स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल की अध्यक्षता में दिव्यांगजनों के कल्याण से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विभिन्न विभागों

के साथ बैठक आयोजित की गयी।

इस बैठक में उन्होंने सभी विभागों को दिव्यांगों के लिए आरक्षित रिक्त पड़े बैकलॉग पदों की 29 फरवरी, 2024 तक सूची तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने विभागों को रिक्त पड़े सभी पदों को केंद्र सरकार की अधिसूचना अनुसार भरने के लिए भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बैकलॉग पदों को भरने पर विशेष ध्यान दे रही है ताकि दिव्यांगों को शीघ्र भर्ती लाभ प्रदान किया जा सके।

शांडिल ने कहा कि दिव्यांगों के लिए सरकारी नौकरियों में 4 प्रतिशत आरक्षण का प्रावधान है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि भर्तियों, नियमितीकरण एवं पदोन्नति के समय दिव्यांगों के लिए आरक्षण रोस्टर की सख्ती से अनुपालना की जाये।

उन्होंने कहा कि दिव्यांगों के लिए नॉन स्टॉप एवं प्रदेश से बाहर के रूटों पर चलने वाली सरकारी बसों में भी निःशुल्क यात्रा सुविधा प्रदान करने सहित अन्य मांगों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार दिव्यांगों के लिए चलाई जा रही विभिन्न सरकारी नीतियों एवं कार्यक्रमों और केंद्रीय योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

शिक्षा विभाग में कार्यरत महिला कुक-कम-हेल्पर को 180 दिन का मातृत्व अवकाश प्रदान करने का निर्णय

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि समाज का समग्र विकास तभी संभव है, जब कमजोर और पिछड़े वर्ग के साथ महिलाओं और बच्चों का भी समावेशी विकास हो। उन्होंने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार इन वर्गो के विकास के लिए पहले दिन से ही कार्य कर रही है। मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य की दिशा में कार्य करते हुए राज्य सरकार ने शिक्षा विभाग में कार्यरत 17,889 महिला कुक-कम-हेल्पर को मातृत्व लाभ अधिनियम, 1962 के तहत 180 दिन का मातृत्व अवकाश प्रदान करने का निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि महिला कुक के लिए शिक्षा विभाग में पहले इस तरह का कोई प्रावधान नहीं था। लेकिन वर्तमान सरकार ने शिशु और मातृ कल्याण को ध्यान में रखते हुए लम्बे समय से चली आ रही मूलभूत मांग को पूरा करने के लिए शिक्षा विभाग को निर्देश जारी कर दिए हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार सत्ता संभालने के पहले दिन से ही कर्मचारियों और श्रमिकों को लाभ पहुंचाने के लिए ऐतिहासिक निर्णय ले रही उन्होंने कहा कि मंत्रिमण्डल की पहली बैठक में पुरानी पेंशन बहाल करना सरकार का ऐतिहासिक फैसला था। इससे 1 लाख 36 हजार कर्मचारियों को लाभ मिला है। कर्मचारियों के भविष्य को सुरक्षित करना और उनके बुढ़ापे को सम्मानजनक बनाना सरकार का ध्येय है।

उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कमजोर और वंचित वर्गो के उत्थान पर विशेष ध्यान दिया है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने कमजोर वर्ग को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए प्राथमिकता प्रदान की है। सरकार ने इन वर्गो को लाभ पहुंचाने के लिए अनेक महत्वाकांक्षी योजनाएं आरम्भ की हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान सरकार ने दैनिक वेतनभोगी कर्मचारियों की दैनिक मजदूरी बढ़ाने के साथ शिक्षा विभाग के अशंकालिक जलवाहकों, आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, आंगनबाड़ी सहायिकाओं, आशा कार्यकर्ताओं, मीड डे मील कर्मियों, जल शक्ति विभाग के बहुउद्देशीय कर्मियों, पैरा फिटर एवं पम्प ऑपरेटरों, पंचायत और राजस्व चौकीदारों के मानदेय में बढ़ौतरी की है।

फल पौधों को लगाने का सही समय

शिमला/शैल। हाल ही में हुई वर्षा व बर्फबारी से तापमान में आयी गिरावट के कारण निचले क्षेत्रों में चिलिंग आवर्स (chilling hours) के पूरे होने की पूरी सम्भावना बढ़ गई है। वर्षा तथा बर्फबारी से आयी नमी के पश्चात् बागवानों को डॉ यशवंत सिंह परमार औदयानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौणी द्वारा परामर्श दिया जाता है कि वह अपने बागीचों में समय रहते फलदार पौधों के रोपण का कार्य पूरा कर लें।

फल पौधों को रोपित करते समय यह विशेष ध्यान रखें कि फलदार पौधों के कलम का जोड़ भूमि के धरातल से लगभग 20-25 से.मी. ऊँचा रहे तथा उनकी जड़े सही दिशा में फैली रहे। स्व निष्फलता वाली किस्मों के साथ 25 से 33 प्रतिशत परागण किस्मों को अवश्य लगाये। इसके अतिरिक्त यह समय फल पौधों के काट-छाँट के लिए भी उपयुक्त हैं तथा बागवान अपने बागीचों में काट-छांट का कार्य भी समय रहते पूरा कर लें। इसके पश्चात् काट-छाँट किये हुए पौधों में बोर्डो मिक्सचर का छिड़काव अवश्य करें।

बागवानों को यह भी सूचित किया जाता है डॉ यशवंत सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर स्थित फल विज्ञान विभाग, बीज विज्ञान विभाग तथा मॉडल फॉर्म में सेब की बहुत सी क़िस्मों तथा सेब के क्लोनल रूटस्टॉक, आड़ू एवं अनार के पौधे अभी विक्रय के लिए उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त कृषि विज्ञान केन्द्र कण्डाघाट, कृषि विज्ञान केन्द्र चम्बा, बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र, मशोबरा, बजौरा और शारबो में अभी सेब, प्लम आदि के नर्सरी पौधे विक्रय के लिए उपलब्ध है। बागवान इन विभागों व केन्द्रों पर सम्पर्क कर पौधे खरीद सकते हैं। अभी तक विश्वविद्यालय के विभिन्न केन्द्रों से बागवान विभिन्न फलों के 1.40 लाख से अधिक पौधे खरीद चुके हैं।

5 हज़ार करोड़ की आर्थिकी पर संकटः राठौर

शिमला/शैल। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रवक्ता व विधायक ठियोग कुलदीप राठौर ने कहा कि ईरान का सेब अफगानिस्तान के रास्ते से अवैध रूप से आयात हो रहा है। इससे हिमाचल के बागवानों को सबसे ज्यादा नुकसान हो रहा है। शिमला में पत्रकारवार्ता को संबोधित करते हुये

कुलदीप राठौर ने केंद्र सरकार से मांग की है कि इस मामले पर तुरन्त प्रभाव से रोक लगाई जाये। उन्होंने सांसदों से भी इस मामले को केंद्र के समक्ष प्रमुख्ता से उठाने की मांग की है। राठौर ने कहा कि हिमाचल के 20 से 22 विधानसभा क्षेत्रों में सेब पैदा होता है। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर से भी उन्होंने मांग की है कि वे भी केन्द्र सरकार के समक्ष इस मामले को उठाये ताकि प्रदेश के बागवानों के साथ न्याय हो सकें। राठौर ने कहा कि इस मामले को वह विधानसभा में भी उठाएंगे। पहले भी इस मामले को सदन में उठा चुके हैं। राठौर ने कहा कि प्रदेश के बागवानों ने कोल्ड स्टोर व सीए स्टोर में सेब रखा हुआ है। इसका मकसद यही रहता है कि ऑफ सीजन में उन्हें अपनी फसल के अच्छे दाम मिल सके। इसके लिये वह हर महीने सीए स्टोर का किराया देते हैं। इन दिनों बागवान अपने सेब को सीए स्टोर से निकालते हैं, लेकिन इन दिनों दाम ही नहीं मिल रहे हैं।

राठौर ने कहा कि यूएसए, तूर्की, इटली, न्यूजीलैंड व पोलैंड जैसे देशों में सेब की पैदावार होती है। लेकिन सेब आज अफगानिस्तान के रास्ते से आ रहा है। जबकि अफगानिस्तान में ड्राई फ्रूट का उत्पादन होता है। उन्होंने कहा कि ईरान का सेब अफगानिस्तान के रास्ते से लाया जा रहा है। अफगानिस्तान के साथ हमारे देश की संधी है जिसके चलते वहां आयात शुल्क नहीं लगता। इस कालाबाजारी से हिमाचल में सेब के दाम गिर रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार अवैध रूप से सेब का आयात रोकने में पूरी तरह असफल साबित हुई है। राठौर ने कहा कि पिछले लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री व गृहमंत्री ने हिमाचल के बागवानों से वायदा किया था कि सेब पर आयात शुल्क को 50 से बढ़ाकर 100 प्रतिशत किया जाएगा। लेकिन 5 सालों में इसे बढ़ाना तो दूर उल्टा 50 से 30 प्रतिशत पर ला दिया। इससे हिमाचल का सेब उद्योग संकट में है। उन्होंने आरोप लगाया कि बड़े बड़े सेब के व्यापारियों के दबाव में केंद्र ने यह कदम उठाया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के बागवानों ने उनके साथ मुलाकात कर अपनी चिन्ता जताई है। राठौर ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार ने वायदा किया था कि किसान व बागवानों की आय को दोगुना किया जायेगा, लेकिन दोगुना करने के बजाये उन्हें आर्थिक संकट में डाल दिया है। उन्होंने कहा कि डीजल व पैट्रोल के दाम स्थिर है। जबकि कच्चे तेल के दाम लगातार गिर रहे है। जून 2022 में 120 रुपए प्रति बैरल कच्चा तेल था फरवरी 2024 में 77 रुपए प्रति बैरल है। कंपनियां लगातार मुनाफा कमा रही है और आम लोगों को कोई राहत नहीं मिल रही है।

हमीरपुर के लिए जिला योजना, विकास और 20-सूत्रीय कार्यक्रम समीक्षा समिति गठित

शिमला/शैल। प्रदेश सरकार ने हमीरपुर जिला के लिए जिला योजना, विकास और 20-सूत्रीय कार्यक्रम समीक्षा समिति का गठन किया है।

प्रदेश सरकार के प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला योजना, विकास और 20-सूत्रीय कार्यक्रम समीक्षा समिति जिला स्तर पर नीति और योजना परिषद के रूप में कार्य करेगी।

यह समिति जिला स्तर पर संचालित की जाने वाली विकासात्मक योजनाओं, कार्यक्रमों एवं 20-सूत्रीय कार्यक्रम के क्रियान्वयन की निगरानी और समीक्षा के अलावा प्रशासनिक और तकनीकी कर्मियों को आवश्यक निर्देश भी देगी।

समिति के पास पिछड़ा क्षेत्र उप-योजना सहित विभिन्न विकेन्द्रीकृत योजना कार्यक्रमों व योजनाओं और परियोजनाओं की शैल्फ को मंजूरी देने का अंतिम अधिकार होगा। समिति की बैठक अध्यक्ष द्वारा त्रैमासिक आधार पर निर्धारित तिथि एवं स्थान पर आयोजित की जाएगी। समिति की सिफारिशें एवं सुझाव संबंधित विभागाध्यक्षों को उचित कारवाई के लिए भेजी जाएंगी।

इस समिति के अध्यक्ष विधायक इन्द्र दत्त लखपाल हैं और इसके 74 गैर शासकीय सदस्य अधिसूचित किए गए हैं।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाषः 0177-2805015, 94180-15015 फैक्सः 2805015

क्या आने वाला बजट यह जवाब देगा की प्रतिमाह 1000 करोड़ का कर्ज क्यों लेना पड़ रहा है

जब वर्ष 2022 – 23 में राजकोषीय घाटा ही 6170 करोड़ का था तो 3 माह में 6700 करोड़ का कर्ज क्यों लिया गया

जब अनुपूरक मांगों में बजट का आकार ही 4836 करोड़ बढ़ा है तो इतना कर्ज क्यों?

क्या कर्मचारियों की पैन्शन में 20% की कटौती का प्रस्ताव व्यवहारिक होगा?

शिमला/शैल। सुक्खू सरकार अपना दूसरा बजट पेश करने जा रही है। यह बजट चुनावी वर्ष में आ रहा है। क्योंकि लोकसभा इसी वर्ष मई तक होने हैं। यह चुनाव समय से पहले भी हो सकते हैं। यह संभावना बनी हुई है। फिर सत्ता संभालते ही इस सरकार ने प्रदेश की कठिन वित्तीय स्थिति का जिक्र करते हुये प्रदेश के हालात श्रीलंका जैसे हो जाने की चेतावनी भी दी थी। सुक्खू सरकार ने 2022 में दिसम्बर के दूसरे सप्ताह में सत्ता संभाली थी। ऐसे में 31 मार्च 2023 तक की इस सरकार को पूर्व सरकार द्वारा पारित बजट के अनुसार ही कार्य करना था। पूर्व सरकार ने विधानसभा के चुनावी वर्ष के परिदृश्य में बजट के अन्दर घोषित कौन-कौन सी योजनाओं में आवंटित बजट से अधिक या कम खर्च किया है। इसका लेखा-जोखा 2023-24 के बजट सत्र में पिछले वर्ष की अनुपूरक मांगों के रूप में आना था और यह सरकार 13141.07 करोड़ की अनुपूरक मांगे लेकर सदन में आयी थी। स्मरणीय है कि वर्ष 2022-23 के लिये 51364.76 करोड़ का बजट सदन से पारित हुआ था। जब इस वर्ष के लिये 13141.07 करोड़ की अनुपूरक मांगे रखी गयी तो बजट के कुल आकार में केवल 4836 करोड़ की ही बढ़ौतरी हुई। इस बढ़ौतरी का अर्थ था कि वित्त वर्ष 2022-23 की बजट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये सुक्खू सरकार को केवल 4836 करोड़ का ही प्रबन्ध करना था। लेकिन सुक्खू द्वारा लिये गये कर्ज के आंकड़े भाजपा अध्यक्ष डॉ. राजीव बिन्दल ने आरटीआई से जानकारी जुटा कर जारी किये हैं। उनके मुताबिक 31 मार्च 2023 तक सरकार ने 6700 करोड़ का कर्ज लिया है। जबकि इस सरकार ने सत्ता संभालते ही पूर्व सरकार द्वारा अंतिम छः माह में लिये गये फैसलों को पलटते हुये करीब 1000 संस्थाओं और कार्यालय को बंन्द कर दिया था। मंत्रिमंडल में मंत्रियों के तीन पद खाली रखे थे। 31 मार्च 2023 तक इस सरकार ने कोई भर्तीयां भी नहीं की है। फिर मुख्यमंत्री सुक्खू ने अपने बजट भाषण में स्वयं स्वीकारा है कि वर्ष 2022-23 का राजकोषीय घाटा 6170 करोड़ था। ऐसे यह सवाल खड़ा होता है कि अनुपूरक मांगों से बजट का आकार केवल 4836 करोड़ बड़ा है और राजकोषीय घाटा 6170 करोड़ ही रहा है तो फिर वर्ष 2022-23 के लिये इस सरकार को 6700 करोड़ का कर्ज क्यों लेना पड़ा। यह सवाल इसलिये प्रासंगिक और महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि इस सरकार ने डीजल पर वेट बढ़ाने का फैसला संस्थान बन्द करने के फैसले के साथ ही लिया था। इसके बाद बिजली और पानी के रेट भी 31 मार्च 2023 से पहले ही बढ़ायें हैं। कर्मचारियों के लिये ओ.पी.एस लागू करने के फैसले का मार्च 2023 तक सरकार पर कोई अतिरिक्त बोझ नहीं पड़ा है। इसलिए मार्च 2023 तक 6700 करोड़ का कर्ज क्यों लिया गया और कहां खर्च किया गया यह सवाल इन लोकसभा चुनावों में पूरी मुखरता के साथ पूछा ही जायेगा। क्योंकि कर्ज का भुगतान आम आदमी से उठाये गये करों से ही किया जाता है। सुक्खू सरकार ने व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर जो कर्ज ले रखा है उसकी भरपाई भी आम आदमी से लिये गये टैक्स से होती है। फिर अभी यह भी सामने आ गया है कि सरकार इस बजट में पैशन में 20% की कटौती करने जा रही है। यह खुलासा नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने प्रदेश के सामने रखा है। दूसरी ओर मुख्यमंत्री ने व्यवस्था परिवर्तन के प्रयोग के बाद अब प्रदेश को आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि देश का अग्रणी राज्य भी अगले विधानसभा चुनावों तक बनाने की घोषणा की है। ऐसे दावों के परिदृश्य में भी यह सवाल पूछना आवश्यक हो जाता है कि यह कर्ज खर्च कहां किया जा रहा है और प्रतिमाह एक हजार करोड़ का कर्ज लेने की नौबत क्यों आयी है।

14 महीनों में एक भी स्थाई नौकरी नहीं दे पायी कांग्रेस सरकार:बिंदल

शिमला/शैल। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष डॉ. राजीव बिंदल ने प्रैस को सम्बोधित करते हुए कहा कि हिमाचल प्रदेश की वर्तमान कांग्रेस सरकार को बने लगभग 14 महीने पूर्ण हो रहें हैं, परन्तु वर्तमान सरकार द्वारा सत्ता में आने के बाद सबसे पहले लिया गया निर्णय हिमाचल प्रदेश की जनता के ऊपर भारी पड़ रहा है। उन्होंने कहा सरकार सत्ता में आने के बाद पहला निर्णय जनहित का करती है, परंतु कांग्रेस की सुखविंदर सरकार ने बिना कैबिनेट आनन-फानन में 1000 से ज्यादा संस्थान बन्द किये और संस्थानों को बन्द करने का सिलसिला महीनों तक जारी रहा। लगभग 14 महीने में 1400 संस्थान वर्तमान सरकार ने बन्द कर दिए हैं।

डॉ राजीव बिंदल ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने एसडीएम दफ्तर, तहसीलें, प्राइमरी हेल्थ सेंटर और पटवार सर्कल जहाँ पर चिकित्सक, स्टाफ, कर्मचारी काम कर रहे थे। ऐसे कार्यालयों को बन्द करके लोगों की परेशानियां बढ़ाने का काम किया हैं। आज 100-100 लोग लाइन में लगे रहते हैं और महीनों तक उनका काम नहीं होता। उन्होंने कहा कि ऐसी कौन सी वजह थी कि संस्थान बन्द करने पडे। वह संस्थान स्थानीय जनता की मांग के ऊपर खोले गए थे। उन्होंने कहा कि फ़ाइनैन्स डिपार्ट्मैन्ट और कैबिनेट की अप्रूवल के साथ खोले गये संस्थानों को बन्द करके हिमाचल प्रदेश की जनता को धोखा दिया है और जनता के साथ अन्याय किया है,

हिमाचल की जनता का शोषण किया है इसका आज तक कोई इसका जवाब क्यों नहीं दे रहे है कि यह संस्थान क्यों बन्द किये गये।

डॉ राजीव बिंदल ने कहा कि 14 महीनों के कार्यकाल में वर्तमान सरकार ने एक भी स्थाई नौकरी नहीं दी हैं इस दौरान सरकार ने एक भी प्रोफेसर, एक भी अध्यापक, एक भी चिकित्सक और एक भी कर्मचारी नहीं रखा। साथ ही 12 हजार से ज्यादा लोगों को नौकरी से निकाल दिया। हिमाचल प्रदेश के युवकों के साथ इससे बड़ा अन्याय, इससे बड़ा धोखा और कुछ नही हो सकता जो वर्तमान सरकार ने आउटसोर्स पर कार्यरत कर्मचारियों को नौकरी से निकाल कर किया।

आज हिमाचल प्रदेश का कोई जिला ऐसा नहीं है जहां पर लगातार धरने प्रदर्शन न हो रहें हों। जगह-जगह सभी वर्गों के धरने प्रदर्शन हो रहे हैं। परन्तु प्रदेश सरकार कान में तेल डालकर आनन्द में है। ठिठुरती सर्दी में भी कर्मचारी प्रदर्शन करने पर मजबूर है, बर्फ़ में पड़ी रजाइयां गीली हो गयी और वे रजाई निचोड़ कर के वहाँ पर बैठे हैं। ऐसा कौन सा बदला सरकार हिमाचल प्रदेश की जनता से ले रही हैं। प्रदेश के युवा सचिवालय के बाहर रो-रो कर कांग्रेस द्वारा की गयी बातों को याद करवा रहे हैं।

वर्तमान सरकार ने सत्ता में आने से पूर्व बड़े ज़ोर-शोर से प्रदेश भर में यह कहा था कि 67000 नौकरियां हिमाचल प्रदेश में खाली है और वे सत्ता में आने के बाद 33000 और नौकरीयां जोडकर कुल 100000 नौकरियां पहली कैबिनेट में बेरोजगार युवाओं को प्रदान करेंगें। 14 महीने का कार्यकाल में जो प्रदेश की सरकार ने जनता को धोखा दिया, जो गारंटियां दी उनमें से कोई भी गारंटी पूरी नहीं की न ही इस दिशा में कोई कदम उठा रहें हैं। केवल वोट लेने के लिए जो गारंटियां प्रदेश के युवाओं, महिलाओं, बिजली के लिए, किसान के लिए, एंव हर किसी के लिए गारंटी दी। सरकार ने सभी गारंटीयां को ठण्डें बस्ते में डाल के रख दिया है, परन्तु जो गारंटीयां नहीं दी थी, वो संस्थान बन्द करके एंव जनविरोधी निर्णय लेकर और कर्मचारियां और पेंशनर्ज़स के देय भुगतान पर रोक लगा कर बैठे गये हैं और केवल और केवल भाजपा के ऊपर दोषारोपण करने में समय बिता रहें हैं।

उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस की प्रदेश सरकार ने हिमाचल प्रदेश की जनता के 14 महीने बर्बाद कर दिए और प्रदेश को आगे ले जाने के बजाये वर्षों पिछे ले जाने का काम किया है।